॥ ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः॥

स्पिरिचुअल साइंस
Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष : 10 अंक : 116 जोधपुर : हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका जनवरी– 2018 30/–प्रति

सद्गुरुदेव श्री रामलाल सियाग के सिद्धयोग की देन शक्तिपात–दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या? सद्गुरुदेव सियाग के चित्र का ध्यान करके देखें।

www.the-comforter.org

File Photo

ऑनलाइन शक्तिपात-दीक्षा प्राप्त करने के लिए लॉग-ऑन करें-
Web : www.the-comforter.org

मंत्र दीक्षा के लिये मोबाइल नम्बर डायल करें -
07533006009

मुम्बई के कोलाबा नेवी नगर व आसपास के विद्यालयों में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन। (18 से 23 दिसम्बर 2017)

www.thecomforter.org

''ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः''

स्पिरिचुअल साइंस
Spiritual Science

गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष : 10 अंक : 116 जोधपुर:- हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका **जनवरी - 2018**

वार्षिक 300/- ❋ द्विवार्षिक : 600/- ❋ आजीवन (11 वर्ष) : 3000/- ❋ मूल्य 30/-

❖
संस्थापक एवं संरक्षक :
पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलालजी सियाग
(ब्रह्मलीन)

❖
सम्पादक :
रामूराम चौधरी

कार्यालय :
Spiritual Science
पत्रिका
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र
पो.बॉक्स नं.41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत
9784742595
E-mail :
spiritualscienceavsk@gmail.com

Ashram :
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Near Hotel Leriya,
Chopasani, JODHPUR (Raj.)
INDIA - 342 003
☎ +91 0291-2753699
Mob. : +91 9784742595
Website :
avsk@the-comforter.org
Website :
www.the-comforter.org

अ नु क्र म

सद्गुरुदेव का आगमन..4
ईश्वर? (सम्पादकीय)..5
सिद्धियाँ..6
श्री गुरु कृपा ही केवलम्..7
उद्देश्य और गुरुदेव का पत्र..8
The Superamental Manifestation Upon the Earth..9
हृदय मंथन..10
योगियों की आत्मकथा..11
योग के आधार..12
मेरे गुरुदेव..13
शिष्यत्व..14-15
राम से बढ़कर राम का नाम (कहानी)..16-17
सद्गुरुदेव की अमर तस्वीर..18
चित्र पृष्ठ..19-22
अनुभूतियाँ तथा रोगों व नशों से मुक्ति..23-25
हठयोग..26
अहं से मुक्ति..27
समाधि..28
सघन नाम जप द्वारा नशों से छुटकारा..29
मानव शरीर में देव और दानव का युद्ध..30
युवाओं की भूमिका..31
चेतना का विज्ञान..32
અદ્ભૂત સિદ્ધયોગ..33
सिद्धयोग..34
सद्गुरुदेव के श्री मुखारविन्द-दिव्यांश..35
शेष पृष्ठ सम्पादकीय..36-37
ध्यान विधि..38

www.the-comforter.org

सद्गुरुदेव का आगमन

सद्गुरु वह आभामय चेहरा है, जिसे 'ईश्वर' हम तक पहुँचने के लिए धारण करता है।

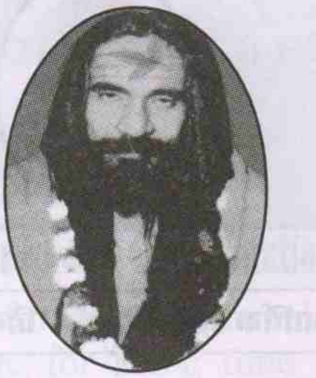

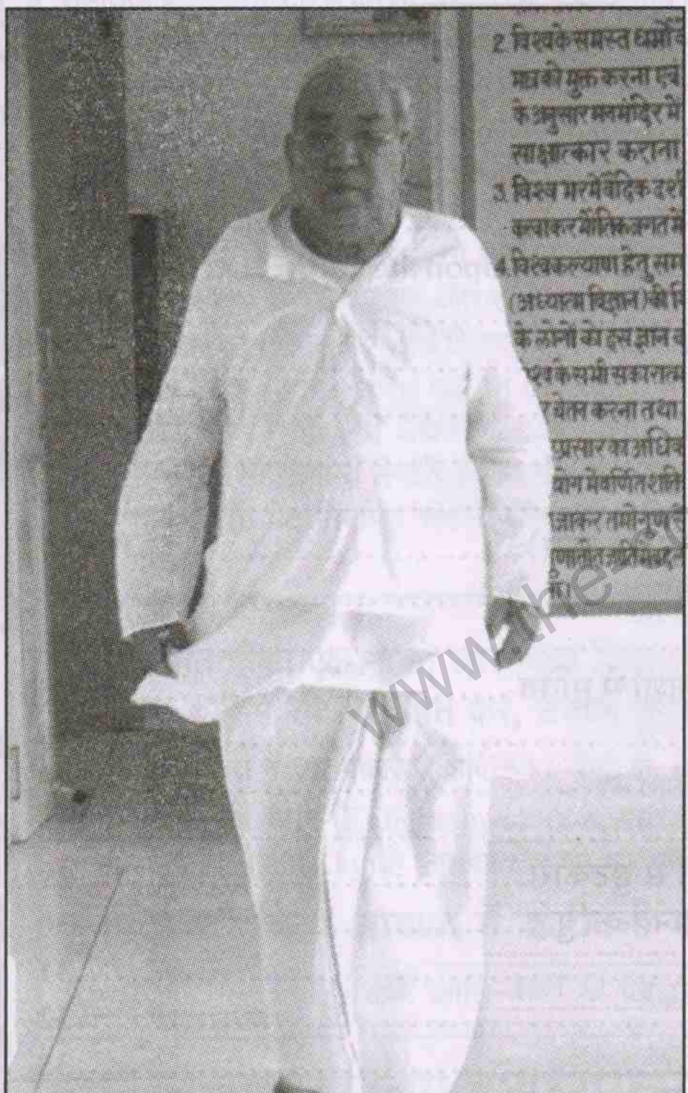

"हम सबको सद्गुरुदेव के आगमन के समय तक प्रतीक्षा करनी चाहिए और सद्गुरुदेव की पूजा 'ईश्वर' की भाँति की जानी चाहिए। वह ईश्वर है, उनसे तनिक भी कम नहीं। सद्गुरु तुम्हारे देखते देखते क्रमशः अंतर्धान हो जाते हैं, और रह क्या जाता है? गुरु के चित्र का स्थान स्वयं ईश्वर ले लेता है।

सद्गुरु वह आभामय चेहरा है, जिसे ईश्वर हम तक पहुँचने के लिए धारण करता है। जब हम एकटक उन्हें निहारते हैं तो धीरे-धीरे चेहरा अदृश्य हो जाता है और ईश्वर प्रकट हो जाता है।

मैं सद्गुरुदेव भगवान् को नमस्कार करता हूँ, जो सर्वगुणातीत और सर्वोच्च है।

-स्वामी विवेकानन्द
वॉल्यूम-3

सम्पादकीय ....

ईश्वर ?

मनुष्य के पूर्ण विकास का नाम ही 'ईश्वर' है-सद्गुरुदेव श्री सियाग

नूतन वर्ष 2018 की समस्त पाठक गणों को हार्दिक शुभकामनाएँ। वर्ष 2018 पूरे विश्व के लिए नई आध्यात्मिक ऊँचाइयों को प्राप्त होने वाला हो, विश्व में परम सत्य का प्रकाश फैलें, ऐसी आशा है। इस अंक में हमारा विषय है-**ईश्वर !**

ईश्वर ?-"जो सभी मानव शरीरों में व्याप्त, हृदय में प्रतिक्षण, पूर्णरूप से निवास करते रहने पर भी जो श्री **गुरुकृपाहीन** को गोचर न होकर, गुप्तवास कर रहा है, वही वेदान्त का अन्तिम लक्ष्य **सच्चिदानन्द** है।

मनुष्य ईश्वर की सर्वोच्च कृति है। सर्वश्रेष्ठ स्वरूप है। **सभी का मत हैं कि मानव का सृजन उसके सृजनहार (ईश्वर) की प्रतिमूर्ति के रूप में हुआ है।** अतः मनुष्य अपना क्रमिक विकास करते हुए अपने सृजनहार (ईश्वर) के तद्रूप बन सकता है। मनुष्य ईश्वर कैसे है ? इस संबंध में भगवान् श्री कृष्ण ने मनुष्य की व्याख्या करते हुए गीता के 13 वें अध्याय के 22 वें श्लोक में स्पष्ट शब्दों में कहा है-

उपद्रष्टानुमन्ता च भर्ता
भोक्ता महेश्वरः।
परमात्मेति चाप्युक्तो
देहेऽस्मिन्पुरुषः परः।।
13:22।।

"पुरुष इस देह में स्थित हुआ भी 'पर' त्रिगुणातीत है। केवल साक्षी होने से उपद्रष्टा और यथार्थ सम्मति देने वाला होने से अनुमन्ता एवं सबको धारण करने वाला होने से भर्ता, जीव रूप से भोक्ता तथा ब्रह्मादिकों का भी स्वामी होने से महेश्वर और शुद्ध सच्चिदानन्दधन होने से "**परमात्मा**" ऐसा कहा गया है।" इस प्रकार मनुष्य

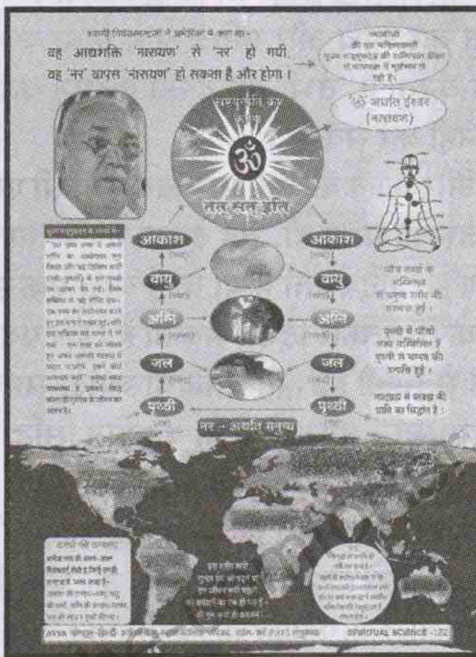

के पूर्ण विकास का नाम ही ईश्वर है।

उपनिषदों का कथन है कि "**सर्वं खल्विदं ब्रह्म**" (यह सब कुछ ब्रह्म है) । मन ब्रह्म है, प्राण ब्रह्म है, जड़ तत्त्व ब्रह्म है। प्राण के देवता, पवन के देवता, वायु को संबोधित करते हुए उपनिषद् कहता है, '**त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि**' तुम प्रत्यक्ष ब्रह्म हो। मनुष्य, पशु, पक्षी और कीट-पतंग हर एक का अलग-अलग '**एकमेव**' के साथ '**तादात्म्य**' किया गया है। ब्रह्म वह चेतना है जो अपने-आपको उस सबमें जानती है जिसका अस्तित्व है। ब्रह्म आनंद है, सत्ता का वह गुप्त आनंद है जो हमारी सत्ता का आकाश है जिसके बिना कोई जी नहीं सकता, सांस नहीं ले सकता। ब्रह्म सभी के अंदर अंतरात्मा है।

अर्थात् ईश्वर से आकाश, आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल और जल से पृथ्वी की उत्पत्ति हुई। इस प्रकार पृथ्वी में पाँच तत्त्वों (आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी) के सम्मिलन से मनुष्य शरीर की संरचना हुई। "**उस परम सत्ता ने अपनी शक्ति का अधोगमन शुरू किया और उसने विभिन्न रूपों (स्त्री-पुरुषों) को धारण किया। जिस प्रक्रिया से वह शक्ति एक एक तत्त्व का अधोगमन करते हुए इस रूप में प्रकट हुई। यदि इस प्रक्रिया को उलट दें तो एक-एक तत्त्व को जीतते हुए, अपने असली स्वरूप में बदल जाओगे, इसमें कोई आश्चर्य नहीं।**" वैसे ही जैसे-पानी से बर्फ और बर्फ से पानी बनने की जो प्रक्रिया है। नर से नारायण की यह प्रक्रिया सिद्धयोग में निहित है।

ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार कैसे संभव है ?

आप अपने घर बैठे ही सिद्धयोग की बताई गई प्रक्रिया के द्वारा ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार कर अपने असली स्वरूप को जान सकते

शेष पृष्ठ 36 व 37 पर....

सिद्धियाँ

जब साधक योग साधना में आगे बढ़ता है तो उसको आराधना काल में अनेक प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। सिद्धयोगियों ने इन सिद्धियाँ में नहीं फंसने की बात कही है। सद्गुरुदेव ने अपनी कर कमल की लेखनी से लिखकर यह पाठ्य सामग्री इस पुस्तक में छापने का आदेश दिया था।

शास्त्रिय महर्षियों ने मोटे तौर से तीन प्रकार की सिद्धियाँ बताई हैं। हम उन तीनों को तमोगुण-सिद्धि, रजोगुण-सिद्धि एवं सतोगुण-सिद्धि के नाम से समझ सकते हैं:-

1 .मैली(तमोगुणी)-वह है, जो अशुद्धि व्रत, मंत्र या द्रव द्वारा प्राप्त की जाती है। इस मैली-सिद्धि जानने वालों को यदि स्नान करवा कर शुचि और पवित्र बना दिया जाय तो वह अपनी सिद्धि नहीं कर सकता। जब वह हाथ या पैर मैला करता है, तभी सिद्धि का प्रदर्शन कर सकता है। यह सिद्धि दूसरों का अनिष्ट करती है, किसी का मंगल नहीं कर सकती।

2. मंत्र-सिद्धि-वह है,जो देश और काल की अपेक्षा रखकर किसी एक देवता को लक्ष्य करके मंत्रजप से प्राप्त की जाती है। यह सिद्धि जिसको प्राप्त हो, वह देवता का स्मरण या मंत्रजप करके हाथ में फल, मिठाई एवं सोने-चाँदी के आभूषण इत्यादि लाता है या कोई वस्तु एक स्थल से दूसरे स्थल पर संक्रमित करता है तथा और भी कई प्रकार के चमत्कार दिखा सकता है। इस प्रकार की सिद्धियाँ दिखाने से लोग आकर्षित होते हैं। ऐसी कृत्रिम रीति से मिली हुई क्षुद्र सिद्धियाँ ज्यादा समय तक नहीं टिकती।

3. अष्टांगयोग करने से जो संयमसिद्धि प्राप्त होती है, वह योग सिद्धि है। यह सत्य और शास्त्रिय सिद्धि है।

4. चौथी सिद्धि त्रिगुणातीत उस परमसत्ता की है, जिसे महासिद्धियाँ त्रिगुणातीत सिद्धि कहते है। यह वह सिद्धि है, जो हमेशा ईश्वर के आदेश से ही कार्य करती है। उस परम सिद्धि के अधीन आठ प्रकार की शक्तियाँ होती हैं, जिनका वर्णन पातंजलि योगदर्शन के विभूतिपाद के 45 वें सूत्र में निम्न प्रकार से किया है:-

''ततोणिमादिप्रादुर्भावःकायसम्पत्तद्धर्मानभिघातश्च ।। 3:45 ।।

उस (भूतजय) से अणिमादि आठ सिद्धियों का प्रकट होना कायसम्पत्त की प्राप्ति और उन भूतों के धर्मो से बाधा न होना (ये तीनों होते हैं)

अणिमाः- अणु के समान सूक्ष्म रूप धारण कर लेना।

लघिमाः- शरीर को हल्का (भारहीन) कर लेना ।

महिमाः- शरीर को बड़ा(विशालकाय) कर लेना।

गरिमाः- शरीर को भारी कर लेना।

प्राप्तिः- जिस किसी इच्छित भौतिक पदार्थको संकल्पमात्र से ही प्राप्त कर लेना।

प्राकाम्यः- बिना रुकावट भौतिक पदार्थ संबंधी इच्छा की पूर्ति अनायाश हो जाना।

वशित्वः- पाँचों भूतों का और तंजन्य पदार्थों का वश में होना।

ईशित्वः- उन भूत और भौतिक पदार्थों का नाना रूपों में उत्पन्न करने और उन पर शासन करने की सामर्थ्य प्राप्त करना।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

साधक के उच्चत्तम विकास का कारण- श्री गुरुकृपा ही केवलम्

स्वामी शिवोमतीर्थ के मन में एक विचार लगातार चलता था कि गुरुदेव श्री विष्णुतीर्थ महाराज ने ऐसी उच्च अवस्था कैसे प्राप्त की ! मन में विचार कई बार आता था लेकिन संकोचवश पूछ नहीं पाते थे। एक दिन हिम्मत करके पूछ ही डाला कि मेरा एक प्रश्न है ?

विष्णुतीर्थ महाराज-जो मन में आया है, उसे पूछ ही डालो।

शिवोमतीर्थ-आपने ये अवस्था कैसे प्राप्त की ?

विष्णुतीर्थ महाराज-इसमें गुरुकृपा के अतिरिक्त भला और क्या कारण हो सकता है ? जो कुछ गुरुदेव ने कहा उस पर भरोसा करके ग्रहण कर लिया। जो साधन उन्होंने प्रदान किया, उसमें तत्परता पूर्वक लग गया। जो कुछ उन्होंने छोड़ने के लिये कहा, उसे छोड़ दिया। जिस भाव में उन्होंने रहने के लिए कहा, मैंने उसी भाव में अपने आप को डूबो दिया। जो कुछ उन्होंने दिखाया उसे देख लिया, अन्य कुछ देखने की इच्छा ही नहीं की, बस यूँ समझो कि जिधर गुरुजी ने लगाया, उधर लग गया। 'गुरुकृपा' तभी फलीभूत होती है जब शिष्य में संपूर्ण समर्पण हो। समर्पण के बिना "अनन्य भक्ति" की कल्पना दिवास्वप्न मात्र है।

जब मैंने ऐसा किया तो "अन्तर्गुरु" प्रत्यक्ष होकर, उनकी "अन्तर्कृपा" प्रकट होने लगी। जन्म-जन्मातर के चित्त पर जमी मैल धुलने लगी। फिर मन की ऐसी स्थिाति भी आई कि सिद्ध महापुरुषों का दर्शन लाभ भी प्राप्त होने लगा। इसमें मेरा कोई पुरुषार्थ नहीं। जो कुछ है सभी "गुरुकृपा" का ही फल है। पुरुषार्थ का अभिमान साधन में विघ्न बनकर उपस्थित हो जाता है। साधक का यही कर्तव्य है कि गुरुदेव पर भरोसा रखें, तब गुरुदेव अन्तर में आकर बैठ जाते हैं। वही तो साधन करते हैं, रक्षा करते हैं, विघ्नों, संशयों, भ्रांतियों, विकारों, संस्कारों को हटाते हैं।

-स्वामी शिवोमतीर्थ रचित 'अंतिम रचना' पुस्तक पृष्ठ-287-88

www.the-comforter.org

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

उद्देश्य

- समस्त विश्व के मानवों के कल्याण हेतु बिना किसी वर्ग, वर्ण, जाति, धर्म, राष्ट्रीयता एवं लिंग भेद के इस दिव्य अध्यात्म ज्ञान का प्रचार एवं प्रसार करना एवं समस्त विश्व में अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र स्थापित करना।
- विश्व के समस्त धर्मों के विकारों एवं आडम्बरों से मानव मात्र को मुक्त करना एवं अध्यात्म के मूलभूत
- सार्वभौम सिद्धांत के अनुसार मन मंदिर में उस परमतत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार कराना।
- विश्व भर में वैदिक दर्शन की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार करवाकर भौतिक जगत् में विज्ञान की तरह उसे सत्य प्रमाणित करना।
- विश्व कल्याण हेतु संपूर्ण विश्व में वैदिक मनोविज्ञान (अध्यात्म विज्ञान) की शिक्षा हेतु प्रबन्ध करना तथा वहीं के लोगों को इस ज्ञान का प्रशिक्षण देने योग्य बनाना।
- विश्व के सकारात्मक स्त्री-पुरुषों को शक्तिपात-दीक्षा देकर चेतन करना तथा उन्हें अपने ही देश में इस ज्ञान के प्रचार-प्रसार का अधिकार देकर मानव शान्ति का पथ प्रशस्त करना।
- सिद्धयोग में वर्णित शक्तिपात दीक्षा द्वारा मानवीय गुणों में परिवर्तन लाया जाकर तमोगुण से रजोगुण, रजोगुण से सतोगुण, सतोगुण से त्रिगुणातीत जाति में बदलकर उस परम तत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार कराना।

आकाश और पृथ्वी का मिलन-योग

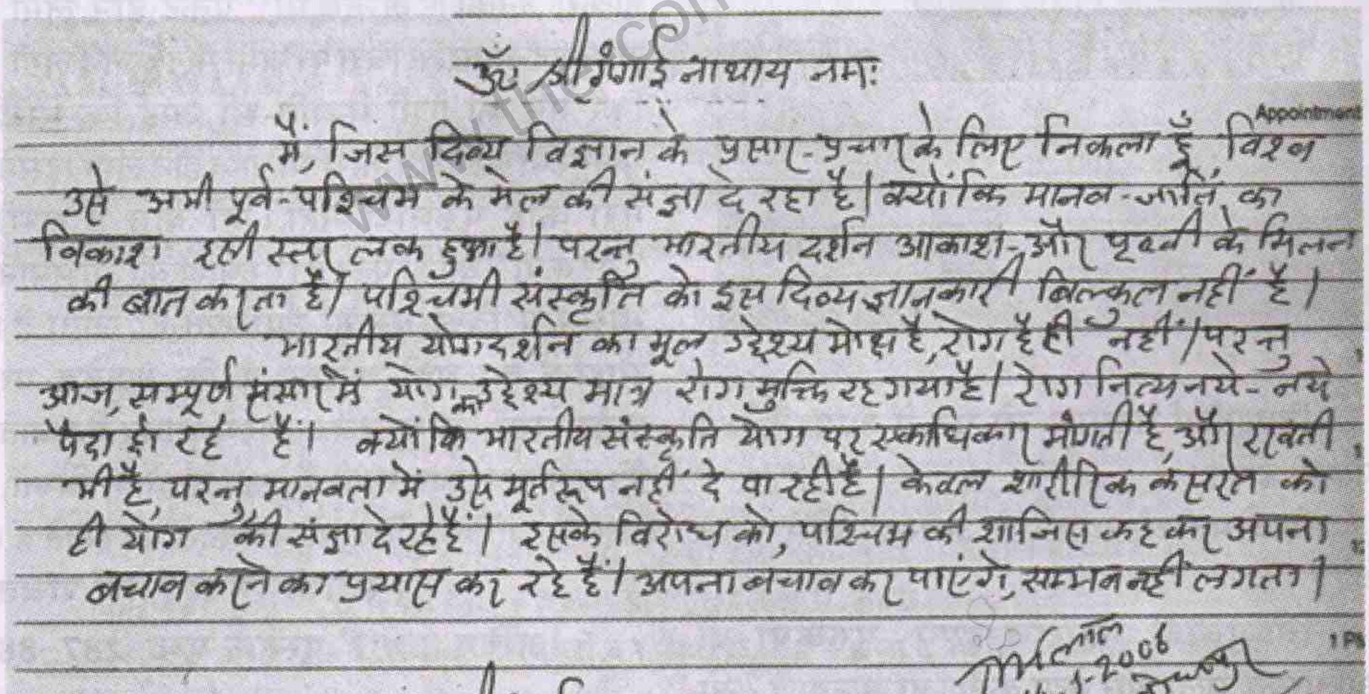
ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

मैं, जिस दिव्य विज्ञान के प्रसार-प्रचार के लिए निकला हूँ विश्व उसे अभी पूर्व-पश्चिम के मेल की संज्ञा दे रहा है। क्योंकि मानव-जाति का विकास इसी स्तर तक हुआ है। परन्तु भारतीय दर्शन आकाश और पृथ्वी के मिलन की बात करता है। पश्चिमी संस्कृति को इस दिव्यज्ञानकारी बिल्कुल नहीं है।

भारतीय योगदर्शन का मूल उद्देश्य मोक्ष है, रोग है ही नहीं। परन्तु आज, सम्पूर्ण संसार में योग का उद्देश्य मात्र रोग मुक्ति रह गया है। रोग नित्य नये-नये पैदा हो रहे हैं। क्योंकि भारतीय संस्कृति योग पर एकाधिकार मानती है, और रखती भी है, परन्तु मानवता में उसे मूर्तरूप नहीं दे पा रही है। केवल शारीरिक कसरत को ही योग की संज्ञा दे रहे हैं। इसके विरोध को, पश्चिम की शाजिश कह कर अपना बचाव करने का प्रयास कर रहे हैं। अपना बचाव कर पाएंगे, सम्भव नहीं लगता।

रामलाल
14-1-2006
AVSK, जोधपुर

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

The Supramental Menifestation Upon Earth
(पृथ्वी पर अतिमानस की अभिव्यक्ति)

There is one problem raised by sex for those who would reject in to the obligations imposed by the animality of the body and put forward by it as an insistent opposition in the way of the aspirant ot a higher life: it is the necessity of the prolongation of the race for which the sex activity is the only means already provided by **Nature** for living beings and inevitably imposed upon the race.

It is not indeed necessary for the individual seeker after a **divine life** to take up this problem or even for a group who do not seek after in for themselves alone but desire a wide acceptance of it by **mankind** as at least an ideal. There will always be the multitude who do not concern themselves with it or are not ready for its complete practice and to these can be left the care for the prolongation of the race.

The number of those who lead the divine life can be maintained and increased as the ideal extends itself, by the voluntary adhesion of those who are touched by the aspiration and there need be no resort to physical means for this purpose, no deviation from the rule of a strict sexual abstinence.

But yet there may be **circumstances** in which from another standpoint, a **voluntary creation** of bodies for souls that seek to enter the **earth-life** to help in the creation and extension of the divine life upon earth might be found to be desirable.

Then the necessity of a physical procreation for this purpose could only be avoided if new means of a supra physical kind were evolved and made available. A development of this kind must necessarily belong to what is now considered as the sphere of the occult and the use of concealed powers of action or creation not known or possessed by the common mind of the race. Occultism means rightly the use of the higher powers of our nature, soul, mind, life-force and the faculties of the **subtle physical consciousness** to bring about results on their own or on the material plane by some pressure of their own secret law and its potentialities, for manifestation and result in human or earthly mind and life and body or in objects and events in the world of Matter.

A discovery or and extension of these little known or yet undeveloped powers is now envisaged by some well-known thinkers as a next step to be taken by mankind in its immediate evolution; the kind of creation spoken of has not been included among these developments, but it could well be considered as one of the new possibilities. Even physical science is trying to find physical means for passing beyond the ordinary instrumentation or procedure of Nature in this matter of propagation or the resort to occult means and the intervention of subtle physical processes.

Contd.....

गतांक से आगे...

"हृदय मंथन"

"पहले सन्तों-महापुरुषों की जीवनी लिखने की कोई परिपाटी नहीं थी। उनके श्रद्धालुओं, भक्तों में उनके बारे में कई प्रकार के चमत्कार प्रसिद्ध हो जाया करते थे, जो कि प्राय: भक्तों की भावना मात्र होते थे। इन्हीं किंवदंतियों के आधार पर उस संत विशेष का जीवन-चरित्र लिखा जाता था।

भक्त लोग उन चमत्कारों पर पूर्ण विश्वास करते थे। इससे उनमें श्रद्धा तथा विश्वास की अभिवृद्धि भी होती थी। इस प्रकार संतों में चमत्कार दिखाने की एक होड़ सी लग गई। यह बात गौण हो गई कि किस संत ने कैसे मानसिक विकास किया, कैसे कठिनाइयों को सहन किया तथा उन पर काबू पाया? उसकी साधना का क्रम क्या रहा, कैसे आन्तरिक विकारों का सामना किया तथा कैसे सामान्य अवस्था से ऊपर उठकर उच्च अवस्था प्राप्त की?

यदि ये सब बातें लोगों के सामने आएँ, तथा वे उन पर कुछ विचार करें तो उनका कुछ लाभ भी हो सकता है, किन्तु भक्त-गण संतों के केवल चमत्कारों का गुण-गान कर संतुष्ट हो जाते हैं। उन्हें यह याद ही नहीं रहता कि अमुक संत भी पहले उन्हीं की भाँति मानसिक विकारों से ग्रसित थे। कैसे चल कर वे इतने ऊँचे उठे? यदि वे इतनी उन्नति कर सकते हैं तो उस मार्ग पर चलकर हम क्यों नहीं कर सकते? पर यह सब नहीं होता। इसीलिए भारत में या तो बहुत ऊँचे संत हैं या वासनाओं में जकड़ी सामान्य जनता। दोनों की बीच की कड़ी छूटी हुई है।

"जैसा कि मैंने कहा कि आत्म स्थिति में कोई चमत्कार या सिद्धि नहीं होती। सिद्धियाँ समाधि से पूर्व अवस्था में होती हैं। जो भी सिद्धियों के प्रदर्शन में उलझ जाता है वह असम्प्रज्ञात समाधि में नहीं जा पाता। इसलिए साधक को सिद्धियों का प्रयोग नहीं करने की बात योग-दर्शन कहता है।

जिन्हें आत्म स्थिति प्राप्त है वे भी चित्त से युक्त होकर ही चमत्कार दिखा सकते हैं, किन्तु इससे उनके मन में आसक्ति या अभिमान के संस्कार संचय नहीं होते। सिद्धियाँ प्राप्त मनुष्य को सिद्ध पुरुष कहा जाता है, किन्तु वास्तविक सिद्ध पुरुष वही है जिसे आत्म-स्थिति सिद्धि प्राप्त हो अर्थात् आत्म-स्थिति ही वास्तविक सिद्धि है।

ऐसे सिद्ध पुरुष भगवान् के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करते, प्रकृति के नियमों के विपरीत नहीं जाते, यदि कभी जाते भी हैं तो भगवद् संकेत से ही। आत्मस्थिति विहीन, किन्तु सिद्धियाँ प्राप्त मनुष्य, यदि सिद्धियों का उपयोग करता है तो भगवद् कार्यों तथा निर्णयों में हस्तक्षेप करता है। वह इसे जनकल्याण का नाम देता है, किन्तु अन्तर में अहंकार को पुष्ट करता जाता है। परिणामत: एक दिन ऐसा आता है जब न उसकी सिद्धियाँ ही रहती हैं, न जनकल्याण की भावना ही। अन्तत: उसका पतन हो जाता है।

"जगत् प्राय: चमत्कार को नमस्कार करता है, किन्तु नमस्कार करने वाले अध्यात्म को नहीं समझते हैं, जगदाभिमुख होते हैं तथा चमत्कार दिखाने वाले भी। पतनोन्मुख सिद्धियों के लिए साधना करना, समय नष्ट करना तथा अपनी वृत्ति को बिगाड़ना है। भगवद् भक्तों ने भगवान् से कभी कोई सिद्धि नहीं माँगी, न कभी उसका प्रदर्शन किया। वे सदा प्रभु-प्रेम में ही तल्लीन रहे। यदि कभी कोई चमत्कार हुआ भी तो भगवान् की ओर से ही, भक्त की ओर से नहीं।

वे अभाव का कष्ट सहन करते रहे, अपमान तथा अपयश का बोझ ढोते रहे, किन्तु भगवान् से किसी भी सिद्धि की याचना नहीं की, कि आततायियों को दण्ड दे सकें। वे किसी को अपना शत्रु या विरोधी मानते ही नहीं थे। जगत् की दृष्टि से, सबसे बड़ी सिद्धि समताभाव है। बाकी सभी सिद्धियाँ आती हैं, जाती हैं। इनके लिए प्रयत्न क्या करना?"

धन्य हैं गुरु महाराज जिन्होंने ऐसी समझ प्रदान की। जगत् में शुद्ध अध्यात्म की प्राप्ति अत्यन्त कठिन है। जीव को मार्ग भटकते देर नहीं लगती। वह भगवान् के मार्ग पर चलना आरंभ करता है, किन्तु फलों में उलझ कर रह जाता है। अष्ट सिद्धियों को बड़ी उपलब्धि मानता है। कितनी कठिन चढ़ाई है? कैसी फिसलन है? कितना अंधकार है? जीव समझ ही नहीं पाता उसे तभी पता चलता है, जब पाँव लड़खड़ाते और वह गहरी खाई में जा गिरता है, अकेला असहाय अशक्त। बेचारे जीव को भगवान् ही सँभालें या गुरुदेव बचाएँ तभी उसका कल्याण हो सकता है। ऐसे गुरुदेव की जन्म-जन्मान्तर सेवा की जाए तो भी उऋण नहीं हुआ जा सकता।

संदर्भ-स्वामी शिवोमतीर्थ
'हृदय मंथन-1

क्रमश: अगले अंक में...

योगियों की आत्मकथा

-परमहंस श्री योगानंद

यहाँ पर अमर, हमारे वार्तालाप में टपक पड़ा; उसने कहा कि मेरे साथ पुनः हरिद्वार आने का उसका कोई इरादा नहीं है। वह पारिवारिक स्नेहसुधा का उपभोग कर रहा था। परन्तु मुझे विश्वास था कि मैं कभी भी अपने गुरु की खोज का परित्याग नहीं करूँगा।

हमारी मण्डली बनारस के लिये रेलगाड़ी पर सवार हो गयी। वहाँ मुझे अपनी प्रार्थना का एक अद्‌भुत और प्रत्यक्ष उत्तर मिल गया।

अनन्तदा ने पहले से ही एक कौशलपूर्ण व्यूह रचना कर रखी थी। हरिद्वार में मुझसे मिलने से पहले वे बनारस में उतर गये थे और वहाँ उन्होंने एक शास्त्रपंडित से मिलकर मुझे उससे उपदेश दिलाने की व्यवस्था कर रखी थी। पंडित और उनके सुपुत्र ने भी, मुझे संन्यास पथ से विरत कर देने का प्रयास करने का अनंतदा को वचन दे रखा था।

अनन्तदा मुझे उनके घर ले गये। पंडितजी के अति उत्साही स्वभाववाले युवा पुत्र ने आगे बढ़कर आँगन में ही मेरा स्वागत किया। उसने मुझे एक लम्बे दार्शनिक तर्क-वितर्क में उलझा लिया। अपनी अतींद्रिय दृष्टि से मेरे भविष्य को देख पाने का दावा करते हुए उन्होंने मेरे संन्यासी बनने के विचार पर असहमति प्रकट की।

''यदि तुम अपने साधारण उत्तरदायित्वों को त्याग देने का हठ करोगे तो निरन्तर दुर्भाग्य का शिकार बनोगे और ईश्वर को पाने में असमर्थ रहोगे ! सांसारिक अनुभव के बिना तुम अपने पूर्व कर्मों को समाप्त नहीं कर सकते।''

उत्तर में भगवद्‌गीता के सनातन शब्द, मेरे होठों पर उभर आयेः।

''यदि कोई अतिशय दुराचारी भी अनन्य भाव से मुझे भजता है; तो उसके पिछले दुष्कर्मों का प्रभाव शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। महात्मा बनकर वह शीघ्र शाश्वत शान्ति को प्राप्त करता है। हे कुन्तीपुत्र ! तुम यह निश्चित रूप से जान लो: जो भक्त मुझमें पूर्ण विश्वास रखता है, उसका कभी विनाश नहीं होता !''

किन्तु उस युवक द्वारा दृढ़तापूर्वक की गयी भविष्यवाणी ने मेरे विश्वास को थोड़ा-सा हिला दिया था। अपने हृदय की पूर्ण भक्ति से, मैंने मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना की:

''अभी यहीं और इसी क्षण मेरी सारी व्यग्रता को दूर कर मुझे उत्तर दो, तुम क्या चाहते हो, मैं संन्यासी का जीवन व्यतीत करूँ या संसारी मनुष्य का ?''

पंडितजी के घर की चहारदीवारी के निकट ही बाहर मैंने एक उदात्त बदन साधु को खड़े देखा। स्पष्टतया उन्होंने मेरे और स्वघोषित दिव्य द्रष्टा के बीच का वार्तालाप सुन लिया था, क्योंकि उन्होंने अपरिचित होते हुए भी मुझे अपने पास बुलाया। उनके प्रशांत नेत्रों से मैंने एक प्रचण्ड शक्ति को प्रवाहित होते, मैंने अनुभव किया।

''वत्स ! उस मूढ़ की बातें मत सुनो। तुम्हारी प्रार्थना के प्रत्युत्तर स्वरूप ईश्वर मुझे यह आश्वासन देने का निर्देश दे रहे हैं कि तुम्हारे जीवन का एकमेव मार्ग संन्यास ही है।''

विस्मय और कृतज्ञता के साथ इस निर्णायक सन्देश पर मैं प्रसन्नता से मुस्कराया।

''उस आदमी से दूर होकर इधर चले आओ। !'' आंगन से वह ''मूढ़'' मुझे बुला रहा था। मेरे उस सन्तवत् मार्गदर्शक ने आशीर्वाद मुद्रा में हाथ उठाया और वे धीरे-धीरे चले गये।

''वह साधु भी तुम्हारे समान पागल ही है।'' यह मनोज्ञा टिप्पणी करने वाले श्वेतकेशधारी पंडितजी थे। वे और उनके सुपुत्र मेरी ओर शोचनीय दृष्टिरूप से देख रहे थे। ''मैंने सुना है कि उसने भी ईश्वर की सन्दिग्ध खोज के लिये अपना घर-बार छोड़ दिया है।''

मैंने मुँह फेर लिया। अनन्त दा की ओर मुड़कर मैंने कहा कि मैं इन लोगों से और किसी तर्क में नहीं उलझना चाहता। मेरे हतोत्साहित भाई तत्काल प्रस्थान के लिये मान गये। हम लोग शीघ्र ही कोलकाता जानेवाली गाड़ी पर सवार हो गये।

''श्रीमान् गुप्तचरजी ! यह तो बताइये कि आपको कैसे पता चला कि मैं दो साथियों के साथ भागा हूँ ?'' मैंने अपनी उबलती जिज्ञासा शांत करने के लिये घर जाते हुए रास्ते में अनन्तदा से पूछा। वे शरारत भरे ढंग से मुस्कराये।

परमसत्य को पाने के लिए पहले संन्यास मार्ग (निवृत्तिमार्गी) को ही अपनाया जाता था।

''लेकिन सद्‌गुरुदेव की आराधना प्रवृत्तिमार्गी है। साधक अपना सर्वांगीण विकास करते हुए, कैवल्य पद तक पहुँच जाता है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं !''

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

"योग के आधार"

स्थिरता, शांति व समता

-श्री अरविन्द

"समता के बिना साधन में सुदृढ़ प्रतिष्ठा नहीं हो सकती। परिस्थितयाँ चाहे जितनी भी अप्रिय हों, दूसरों का व्यवहार चाहे जितना भी नापसंद हो, तुम्हें पूर्ण स्थिरता के साथ तथा किसी प्रकार की क्षोभ उत्पन्न करनेवाली प्रतिक्रिया के बिना उन्हें ग्रहण करना सीखना चाहिये।"

'समता', इस 'योग' का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण अंग है; यह आवश्यक है कि दुःख और कष्ट में भी समता को बनाये रखा जाये-और इसका अर्थ है दृढ़ता और स्थिरता के साथ सहन करते रहना, बेचैन या विचलित अथवा अवसन्न या हताश न होना और भगवान् की इच्छा पर अटल विश्वास रखकर अग्रसर होते रहना।

परंतु समता के अंदर तामसिक स्वीकृति के लिये कोई स्थान नहीं। उदाहरणार्थ, अगर साधना करते समय किसी प्रयास में सामयिक विफलता हो जाये तो समता अवश्य बनाये रखनी चाहिये, उससे विचलित या हताश नहीं होना चाहिये, पर साथ ही विफलता को भागवत इच्छा का चिह्न भी नहीं समझना चाहिये और न अपना प्रयास ही छोड़ना चाहिये। बल्कि इसके बदले तुम्हें उस विफलता का कारण और तात्पर्य खोज निकालना चाहिये और विश्वास के साथ विजय की ओर आगे बढ़ना चाहिये। यही बात रोग के विषय में भी कही जा सकती है-तुम्हें उससे दुःखित, विचलित या बेचैन नहीं होना चाहिये, पर साथ ही रोग को भगवदिच्छा समझकर स्वीकार भी नहीं करना चाहिये, बल्कि तुम्हें यह समझना चाहिये कि यह शरीर की एक अपूर्णता है और जैसे तुम अपने प्राण की अपूर्णताओं या मन की भूलों को दूर करने की चेष्टा करते हो वैसे ही तुम्हें शरीर की अपूर्णता को भी दूर करना है।

समता के बिना साधन में सुदृढ़ प्रतिष्ठा नहीं हो सकती। परिस्थितयाँ चाहे जितनी भी अप्रिय हों, दूसरों का व्यवहार चाहे जितना भी नापसंद हो, तुम्हें पूर्ण स्थिरता के साथ तथा किसी प्रकार की क्षोभ उत्पन्न करनेवाली प्रतिक्रिया के बिना उन्हें ग्रहण करना सीखना चाहिये। इन्हीं चीजों से समता की परीक्षा होती है। जब सब कुछ अच्छी तरह से चलता रहता है और सभी मनुष्य तथा परिस्थितियाँ अनुकूल होती हैं तब तो स्थिर और सम बने रहना सहज होता है; परंतु जब ये सब विपरीत हो जाते हैं तभी स्थिरता, शांति और समता की पूर्णता की जाँच की जा सकती है, तभी उन्हें दृढ़तर और पूर्णतर बनाया जा सकता है।

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे....

! ! मेरे गुरुदेव ! !

-स्वामी विवेकानन्द

कुछ समय बाद बालक (श्रीरामकृष्ण परमहंस) को यह दृढ़ विश्वास हो गया कि सब प्रकार की लौकिक शिक्षा का ध्येय अधिकाधिक सम्पति संचय करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं है और उसने इस प्रकार की शिक्षा को छोड़ देने तथा अपने को केवल आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए तन-मन से लगा देने का निश्चय किया।

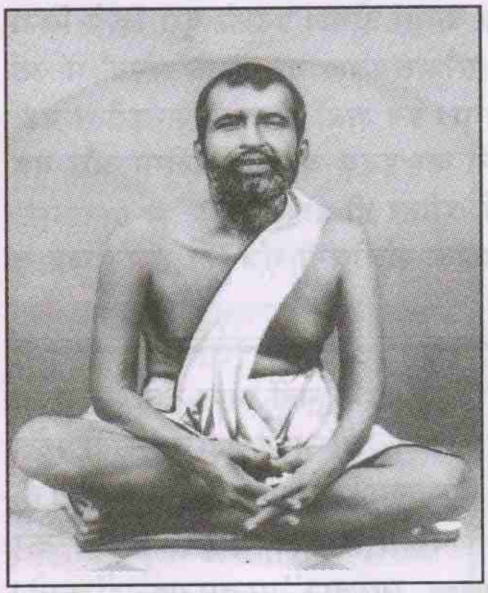

जब वह बालक बिल्कुल छोटा था, तभी उसके पिता का देहान्त हो गया और वह लड़का फिर पाठशाला भेजा गया। ब्राह्मण के लड़के के लिए पाठशाला जाना आवश्यक है, क्योंकि जाति-बन्धन के अनुसार उसको केवल पढ़ने-लिखने का ही कार्य करना चाहिए।

भारत की प्राचीन शिक्षा-पद्धति, जो आजकल भी देश में कई जगह प्रचलित है, और विशेषत: **संन्यासियों से संबंधित शिक्षा-पद्धति**, आधुनिक शिक्षा से बहुत भिन्न है। विद्यार्थियों को कोई शुल्क नहीं देना पड़ता था, क्योंकि **सोचा ऐसा जाता था कि ज्ञान बहुत पवित्र है और किसी मनुष्य को इसे बेचना नहीं चाहिए।**

शिक्षा-दान नि:शुल्क तथा उदारतापूर्वक दिया जाना चाहिए। गुरुजन शिष्यों को नि:शुल्क भरती करते थे और इतना ही नहीं, बल्कि उनमें से अधिकांश अपने शिष्यों को भोजन और वस्त्र भी देते थे ! इन गुरुजनों की सहायता के लिए रईस लोग विवाह संस्कार, श्राद्ध संस्कार आदि कई शुभ अवसरों पर इनको दान-दक्षिणा देते थे।

ये गुरुजन कुछ विशेष प्रकार की दान-दक्षिणा के सर्वप्रथम अधिकारी समझे जाते थे और वे उसके बदले में अपने छात्रों का पालन-पोषण करते थे। अत: जब कभी कोई विवाह संस्कार होता है, और विशेषकर रईस घराने में तो ये गुरुजन आमंत्रित किये जाते हैं, और वे सम्मिलित होते हैं तथा उस अवसर पर उनमें भिन्न-भिन्न विषयों पर चर्चा होती है।

एक बार यह बालक गुरुजनों के सम्मेलन में जा पहुँचा। गुरुजन उस समय तर्कशास्त्र, ज्योतिष आदि भिन्न-भिन्न विषयों पर, जो इस बालक की अवस्था के अनुसार **अत्यन्त गहन एवं गूढ़ विषय** थे, बहस कर रहे थे। जैसा मैं पहले ही कह चुका हूँ, यह बालक बड़ा विलक्षण था और उसने इस विवाद से यह सार निकाला कि इनके कोरे पुस्तकीय ज्ञान का फल यह वाद-विवाद है। ये सब इतनी बुरी तरह से क्यों लड़ रहे हैं ? यह केवल धन के लिए ही है, क्योंकि जो मनुष्य यहाँ अपनी विद्वता सबसे अधिक दिखा सकेगा, वही वस्त्रों की सबसे अच्छी जोड़ी पायेगा और यही ध्येय है, जिसके लिए ये सब लड़ रहे हैं। अत: उसने सोचा कि अब मैं पाठशाला बिल्कूल नहीं जाऊँगा और सचमुच वह नहीं गया और यही उसके पाठशाला जीवन का अन्त था।

परन्तु इस बालक का बड़ा भाई भी था, जो बड़ा विद्वान था। बड़ा भाई इस बालक को अपने साथ पढ़ाने के लिए कलकत्ता ले गया। कुछ समय बाद बालक को यह **दृढ़ विश्वास** हो गया कि सब प्रकार की लौकिक शिक्षा का ध्येय अधिकाधिक **सम्पति संचय** करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं है और उसने इस प्रकार की शिक्षा को छोड़ देने तथा अपने को केवल **आध्यात्मिक** ज्ञान प्राप्त करने के लिए तन-मन से लगा देने का निश्चय किया।

पिता के स्वर्गवास हो जाने से कुटुम्ब बहुत गरीब हो गया था और इस बालक को अपनी जीविका का प्रबन्ध स्वयं करना पड़ता था। वह कलकत्ते के समीप एक जगह गया और वहाँ एक मन्दिर का पुजारी हो गया।

संदर्भ-विवेकानंद वॉल्यूम-7

क्रमश: अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे....

"शिष्यत्व"

स्वामी विवेकानन्द जी ने अमेरिका में प्रवचन करते हुए बताया कि सद्गुरु के चरणों में जाकर अपना सर्वांगीण विकास करने के लिए कुछ शर्तें हैं जिन्हें शिष्य को पूरी करना आवश्यक हैं। तभी सद्गुरु प्रसन्न होकर आध्यात्मिक ज्ञान से शिष्य का कल्याण करते हैं- 1. सत्य को जानने की तीव्र ईच्छा। 2. शिष्य को अपनी अंतरिन्द्रियों और बहिरिन्द्रियों को नियंत्रित करने में समर्थ होना चाहिए। शिष्य का अपने गुरु में विश्वास होना और कुछ अन्य आध्यात्मिक गुणों में दृढ होना चाहिए। 3. शिष्य में मुक्त होने की आकांक्षा अत्यंत तीव्र हो। 4. उसे सत् और असत् का विवेक हो।

ये वे चार शर्तें हैं, जिन्हें शिष्य बनने की इच्छा रखने वाले को पूरा करना होगा। इनको पूरा किये बिना वह सच्चे गुरु के संपर्क में आने का अधिकारी नहीं बनेगा। और यदि सौभाग्यवश वह उनके संपर्क में आ भी जाता है तो 'गुरु' द्वारा संचरित शक्ति से उसे स्फुरण प्राप्त नहीं होगा। इन शर्तों से कोई समझौता नहीं हो सकता। इन सब शर्तों के--इन सब तैयारियों के--पूर्ण होने पर शिष्य का हृदय-कमल खिलेगा और तब भ्रमर आयेगा। तब शिष्य को ज्ञान होगा कि गुरु उसके शरीर में, उसके भीतर ही थे।

सद्गुरुदेव सियाग के सिद्धयोग की देन शक्तिपात दीक्षा द्वारा-साधक संजीवनी मंत्र का सघन जप व नियमित ध्यान कर अपना उच्चत्तम विकास कर सकता है।

इन्द्रियों की छोटी सी वस्तुओं के लिए मैं इस प्रकार संघर्ष कर सकता हूँ। वह कौन है, जो ईश्वर के लिए इस प्रकार प्रयास करता है? 'बालक अपने खेल में सब कुछ भूल जाते हैं। युवक इन्द्रियों के आनन्द के पीछे पागल हैं; उन्हें और किसी बात की चिंता नहीं हैं। वृद्ध अपने पुराने दुष्कृत्यों के लिए पश्चात्ताप कर रहे हैं' (शंकर)। वे अपने पुराने भोगों के विषय में सोच रहे हैं-वे वृद्ध जो अब कोई भोग नहीं प्राप्त कर सकते। वे जुगाली कर रहे हैं-वे अधिक से अधिक यही कर सकते हैं। कोई उतनी तीव्र लगन के साथ ईश्वर के लिए आतुर नहीं होता, जितनी तीव्रता से वे इन्द्रिय-भोग्य वस्तुओं के लिए लालायित होते हैं।

सभी लोग कहते हैं कि ईश्वर ही सत्य है, वही एक है, जो वास्तव में है; केवल चेतना की ही सत्ता है, पदार्थ की नहीं। फिर भी ईश्वर से वे जो माँगते हैं, वह शायद ही चेतना होती है। वे सदा पार्थिव वस्तुओं की याचना करते हैं। उनकी प्रार्थना में चेतन को जड़ से अलग नहीं रखा जाता। धर्म अब केवल पतन ही रह गया है। सब कुछ पाखण्ड बनता जा रहा है। वर्ष बीतते जा रहे हैं और आध्यात्मिक उपलब्धि कुछ भी नहीं होती। पर मनुष्य को केवल एक वस्तु की भूख होनी चाहिए, आत्मा की, क्योंकि केवल आत्मा का ही अस्तित्व है। यही आदर्श है। यदि तुम इसे अभी नहीं प्राप्त कर सकते तो कहो, ''मैं अभी वहाँ तक नहीं पहुँच सकता। वह आदर्श है, मैं जानता हूँ, पर मैं उसको चरितार्थ नहीं कर सकता।'' पर तुम यह नहीं करते। तुम धर्म को निम्न स्तर पर उतार लाते हो और आत्मा का नाम लेकर जड़ के पीछे दौड़ते हो। तुम सब नास्तिक हो, तुम इन्द्रियों के अतिक्ति और किसी में विश्वास नहीं करते। 'अमुक ने ऐसा ऐसा कहा है - इसमें कुछ तत्त्व हो सकता है। हम कर देखें और मजा लें। हो सकता है, कुछ लाभ हो जाय; शायद मेरी टूटी टाँग ठीक हो जाय।'

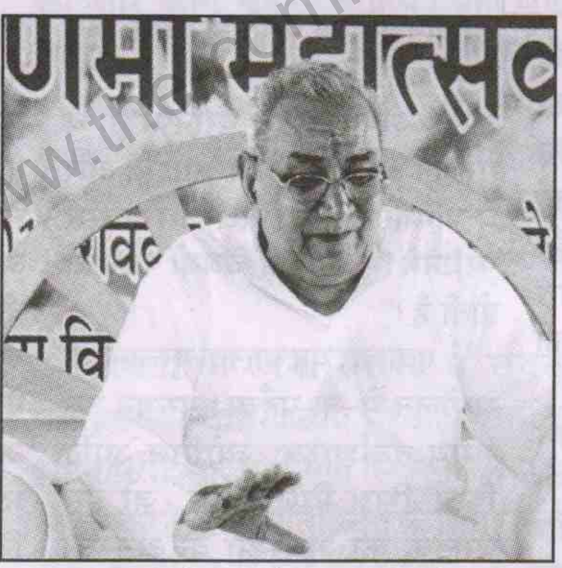

रोगी लोग बहुत दुःखी होते हैं; वे ईश्वर के बड़े उपासक होते हैं, इसलिए कि वे आशा करते हैं कि यदि वे उससे प्रार्थना करेंगे तो वह उन्हें चंगा कर देगा। ऐसा नहीं है कि यह सब एकदम बुरा है - यदि ऐसी प्रार्थनाएँ सच्ची हों और लोग यह याद रखें कि यह धर्म नहीं है। गीता

www.the-comforter.org

में (716) श्री कृष्ण कहते हैं, ''चार प्रकार के मनुष्य मेरी उपासना करते हैं : आर्त, अर्थार्थी, जिज्ञासु और सत्य के ज्ञाता।'' जो लोग दुःखग्रस्त होते हैं, वे सहारे के लिए ईश्वर के निकट जाते हैं। यदि वे रोगी होते हैं तो नीरोग होने के लिए उसकी पूजा करते हैं; यदि उनका धन नष्ट हो जाता है तो वे उसकी पुनः प्राप्ति के लिए प्रार्थना करते हैं।

और दूसरे लोग हैं, जो वासनाओं से भरे हैं, वे उससे सब प्रकार की वस्तुएँ माँगते हैं-नाम, यश, सम्पत्ति, पद इत्यादि। वे कहते हैं, ''हे पवित्र मेरी, यदि मेरी यह इच्छा पूर्ण हो जायेगी तो मैं तुम्हें एक भेंट चढ़ाऊँगा। यदि तुम मेरी इच्छा पूर्ण करने में सफल होती हो तो मैं ईश्वर की पूजा करूँगा और प्रत्येक वस्तु का एक अंश तुम्हें दूँगा।''

जो मनुष्य इतने सांसारिक नहीं होते, पर फिर भी जिन्हें ईश्वर में विश्वास नहीं है, वे उसके बारे में जानने की इच्छा रखते हैं। वे दर्शनों का अध्ययन करते हैं, धर्मशास्त्र पढ़ते हैं, उपदेश सुनते हैं और ऐसे ही अन्य कार्य करते हैं वे जिज्ञासु हैं। अंतिम श्रेणी उन लोगों की है, जो ईश्वर की पूजा करते हैं और उसे जानते हैं ये चारों श्रेणियाँ भली हैं, बुरी नहीं। ये सब उसकी उपासना करते हैं।

पर हम शिष्य बनने का प्रयत्न कर रहे हैं। हमारा एकमात्र ध्येय है, उच्चतम सत्य के ज्ञान की प्राप्ति। हमारा ध्येय सबसे ऊँचा है। हमने अपने से बड़े बड़े शब्द कहे हैं-परम अनुभूत आदि आदि। हमें उन शब्दों के अनुरूप होना चाहिए। हम आत्मा में स्थित होकर आत्मा में आत्मा की उपासना करे। हमारा आधार आत्मा है, मध्य आत्मा है और अंत आत्मा है। संसार कहीं न हो। उसे जाने दो और आकाश में चक्कर लगाने दो-चिंता क्या है? तू आत्मा में **स्थित हो। यह ध्येय है।** हम जानते हैं कि हम अभी उस तक नहीं पहुँच सकते। चिंता मत करो, निराश न होओ और आदर्श को नीचे न घसीटो। महत्त्वपूर्ण बात यह है : कि तुम इस शरीर के बारे में, अपने बारे में, जड़ के रूप में, - मृत, जड़, अचेतन पदार्थ के रूप में कितना कम सोचते हो और अपने बारे में एक उज्ज्वल, अमर अस्तित्व के रूप में कितना अधिक सोचते हो। तुम अपने को उज्ज्वल, अमर अस्तित्व के रूप में जितना अधिक सोचोगे, उतने ही अधिक तुम पदार्थ, शरीर और इन्द्रियों से सम्पूर्ण मुक्ति प्राप्त करने के लिए उत्सुक होंगे। मुक्त होने की तीव्र इच्छा यही है।

''पर हम शिष्य बनने का प्रयत्न कर रहे हैं। हमारा एकमात्र ध्येय है, उच्चतम सत्य के ज्ञान की प्राप्ति। हमारा ध्येय सबसे ऊँचा है।''

चौथी और अंतिम शर्त शिष्यता की यह है कि उसे सत् और असत् का विवेक हो। केवल एक वस्तु-ईश्वर-है, जो सत्य है। सर्वदा मन उनकी ओर लगा रहे, उसे समर्पित रहे। ईश्वर है, उसके अतिरिक्त और कुछ नहीं है, और सब आता जाता रहता है। संसार की कोई भी इच्छा भ्रम हैं, इसलिए कि संसार मिथ्या है। जब तक और सब मिथ्या-जैसा वह वास्तव में है-प्रतीत न होने लगे, मन को केवल ईश्वर के प्रति ही अधिकाधिक अनुभवशील होना चाहिए।

ये वे चार शर्ते हैं, जिन्हें शिष्य बनने की इच्छा रखनेवाले को पूरा करना होगा। इनको पूरा किये बिना वह सच्चे गुरु के सम्पर्क में आने का अधिकारी नहीं बनेगा। और यदि सौभाग्यवश वह उसके सम्पर्क में आ भी जाता है तो गुरु द्वारा संचरित शक्ति से उसे स्फुरण नहीं प्राप्त होगा। इन शर्तों से कोई समझौता नहीं हो सकता।

इन सब शर्तों के-इन सब तैयारियों के पूर्ण होने पर शिष्य का हृदय-कमल खिलेगा और तब भ्रमर आयेगा। तब शिष्य को ज्ञान होगा कि गुरु उसके शरीर में, उसके भीतर था। वह खिलता है। वह अनुभूति पाता है। वह जीवन के सागर को पार करता है, परे जाता है। वह इस भयावह सागर को पार करता है; और दयावश बिना लाभ अथवा स्तुति का विचार किये, दूसरों को इसे पार करने में सहायता देता है।

समाप्त
विवेकानन्द साहित्य भाग-3

www.the-comforter.org

कहानी...

'राम' से बढ़कर 'राम' का नाम

अयोध्या में एक समय राम दरबार जुड़ा हुआ था। वहाँ मुनि, नाग, किन्नर, यक्ष, विश्वामित्र, राजगुरु वशिष्ठ, कुबेर व नारद, सब यथास्थान विराजमान थे। देश देशांतर के राजा महाराजा भी आए हुए थे। इनमें राजा पौरू भी पहुँचे थे।

महामुनि नारद ने अपनी नारद विद्या से काम लिया, राजा पौरू के सभा मंडल में आते ही उनसे राम, वशिष्ठ, नाग, यक्ष आदि सब राजा-महाराजाओं को तो प्रणाम करवाया लेकिन इशारे में विश्वामित्र को आदर नहीं देते हुए उन्हें प्रणाम नहीं करवाया। इस बात का वही परिणाम निकला जिसकी कल्पना की जा रही थी। विश्वामित्र के क्रोध का पारावार न रहा। उन्होंने गुस्से में भरे-तीखे स्वर में राम से प्रश्न किया, वहाँ अनादर अपमान कराने के लिए आम सभा बुलाई है। राजा से बिना सोचे मेरा तिरस्कार किया इसका बदला आपको चुकाना होगा। कल संध्या तक पोरू का कटा मस्तक मेरे चरणों में नहीं आया तो सम्पूर्ण अवधपुरी मेरे क्रोध की ज्वाला में राख की ढेरी हो जाएगी। राजा राम ने उन्हें विश्वास दिलाया कि आपका वचन पूरा करूँगा। लेकिन क्रोध की आग में सुलगते हुए विश्वामित्र को ये वाक्य ढाढ़स नहीं बँधा पाए। तिलमिलाते राजर्षि ने कहा, 'राम, वचन पूरा करने के लिए प्रतिज्ञा करके सौगंध खाओ'। राम बोले - 'हे गुरुदेव आज सच कहता हूँ, जिनकी भावनाओं में हमेशा रहा हूँ, सभा समक्ष पवन तनय की सौगंध है कि संध्या वंदन से पहले पौरू का कटा मस्तक आपके चरणों में होगा।'

राम की भविष्यवाणी सुनकर पौरू घबरा गया। कातर दृष्टि से गिड़गिड़ाते हुए कहा, 'हे मुनिराज नारद ! रक्षा करो। तुम्हीं रास्ता बताओ जिससे प्राण रक्षा हो।' नारद बोले, 'उपाय ! जिससे लाठी भी नहीं टूटेगी और सर्प भी मर जाएगा। हे राजन आपको जीवन प्यारा हो तो इसी क्षण हुनमान की शरण में चले जाइए।'

राजा पौरू ने ऐसा ही किया। वे हनुमान के घर की तरफ निकल पड़े। दरवाजे पर दस्तक देते ही महावीर ने अतिथि का सत्कार किया, और आने का कारण पूछा। राजा पौरू ने दोनों हाथ बाँधकर अपनी आप बीती बताई। मारूति नंदन ने स्थिति को भांपते हुए सांत्वना दी। लेकिन प्राण रक्षा हो जाएगी, यह बात राजा के गले नहीं उतरी। आग्रह किया कि वचन देकर सौगंध खाइए। हनुमान ने आत्म विश्वास से श्रीराम का जयघोष किया और भगवान् की सौगंध खा गए जिससे राजा को संतोष हुआ।

एक तरफ हनुमान ने राम की दुहाई देकर राजा को विश्वास दिया, उधर राम ने हनुमान की कसम खाकर ऋषि चित्त को शांत किया था। सूर्योदय होते ही श्रीराम ने उन तीनों बाणों का स्मरण किया जिनसे वनवास के समय पंचवटी पर खरदूषण, लंका के कुंभकर्ण, रावण के प्राणांत किए थे। तीनों बाणों को अपनी तूणीर में स्थान देते हुए सूर्यरथ के सफेद घोड़ो पर आरूढ़ होकर वीर वेष में राम चले। उधर हनुमान ने भी अपने स्वामी भगवान् श्री राम का

नामोच्चरण करते हुए राजा को कधों पर बिठा लिया। राम का चार घोड़ों से युक्त रथ पौरू को दिखाई देते ही राजा ने अपने दिल की बात महाबली हनुमान को सुनाई। राजा की आत्म शांति के लिए हनुमान ने मंत्र ''सीता राम'' जपने को दे दिया। फिर क्या था ? राजा के चारों ओर ''सीता राम'' नाम का परकोटा ऐड़ी से चोटी तक हो गया। राम के धनुष से छूआ हुआ बाण जिसने खरदूषण को भेद दिया था, वह आज सीता राम के

www.the-comforter.org

परकोटे से टकराकर बिना राजा को हानि पहुँचाए लौट आया।

राम को सफलता दूर नजर आई तो कुछ क्रोध शरीर में उत्पन्न करके त्रिलोकी नाथ से उस बाण की आराधना की जिससे लंका विजय के समय कुंभकर्ण के प्राण हरे थे, आकाश में बिजली कौंध गई। बाण हवा से बात करता हुआ, राजा की दिशा को बढ़ चला। तीर पौरू का सिर धड़ से अलग करता, इससे पहले ही हनुमान ने राजा को पहले से कुछ बड़ा व वजनदार मंत्र ''श्रीराम जयराम जयजयराम'' दिया जो उच्चारित करते ही सुरक्षा कवच का काम करता हुआ पूरे शरीर पर आच्छादित हो गया। अब राम को सफलता कोसों दूर जाती नजर आई। अयोध्यापति ने अपना अंतिम प्रयास वह दिव्य अस्त्र जो उन्होंने अगस्त्य मुनि से प्राप्त किया था, का आह्वान किया जिससे लंका पर अपनी विजय का डंका बजाते हुए महाआतयाती दशानन के प्राण पखेरू उड़े थे। बाण प्रकट हुआ। राम के हाथ में लेते ही पृथ्वी पर आग की उल्काएँ टूटने लगी, बादल आपस में टकराने लगे, वायु मंद पड़ गई, पृथ्वी डगमगाने लगी शेष घबरा गया।

मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम ने मंत्रोच्चारण किया। कान तक डोरी खींचकर बाण छोड़ दिया। तीर कभी सर्पाकार, कभी अर्द्धचंद्राकार रूप लिए हुए आग बरसाता हुआ राजा पौरू की तरफ मस्तक मर्दन को बढ़ा। इस स्थिति से पौरू के फिर होश उड़ गए। हनुमान ने राजा की मनोदशा देखते हुए अपना अंतिम चमोत्कर्ष मंत्र'' रघुपति राघव राजा राम पतित पावन सीताराम'' का उच्चारण शुरू किया। मत्र उच्चारते ही अभेद्य कवच का काम करते राजा की सम्पूर्ण देह का तीसरा आवरण खड़ा हो गया। बाण अभेद्य नामावली से टकराकर वापस अपने स्वामी की शरण में लौट आया। यह सब क्रिया विश्वामित्र खड़े निहार रहे थे। राम को कार्य में असमर्थ देखकर खुद ने धनुष की गगनभेदी टंकार की, बाण चढ़ाया, तीर धनुष से चला भी नहीं था कि मुनि नारद ने एक पैतरा और बदला। राजा पौरू को सूर्यास्त से पूर्व विश्वामित्र के चरणों में नमन करा दिया। कहने लगे 'ऋषि श्रेष्ठ, आपने कटा हुआ सिर लाने का हुक्म दिया था। **यह सदेह आपकी चरण रज ले रहा है।**

विश्वामित्र ने देखा, जो काम भगवान् ने नहीं किया वो राम के नाम ने किया है। धीरे धीरे उनका गुस्सा शांत हो गया। सूर्य देव भी अस्ताचल की ओर अपना स्वर्ण सा मुख तब तक छिपा चुके थे।

मंत्र में अद्भुत शक्ति होती है। यह बीते युगों का इतिहास भी गवाही देता है। इसलिए **सद्गुरुदेव श्री सियाग** जो दिव्य मंत्र अपने श्रीमुख से देते हैं उसमें **सर्व सामर्थ्य** होती है। बस उनके बताए पथ पर चलना शिष्य का काम है।

कुछ महत्त्वपूर्ण शब्दों के अर्थ–

''सिद्धांत''-(सं.पुं.) विचार और तर्क द्वारा निश्चित किया हुआ मत, उसूल। विद्या, कला आदि के संबंध में कोई ऐसी मूल बात या मत जो किसी विद्वान द्वारा प्रतिपादित या स्थापित हो और जिसे बहुत लोग ठीक मानते हों, ऋषि-मुनियों आदि के मान्य उपदेश, सार की बात, तत्त्वार्थ आदि।

''सिद्ध''-(सं. पुं.) एक प्रकार के देवता जो भुवलोक में रहते हैं अर्थात् वह जिसने 'योग' या 'तपोबल' से सिद्धि पाई हो, महात्मा, ज्ञानी या व्यवहार आदि।

''योगी''-(सं. पुं.) जुड़ा हुआ, आत्मज्ञानी, सुख-दुःख आदि में सम रहनेवाला, सिद्ध पुरुष, योगसिद्ध, आत्मज्ञानी, महादेव, नारंगी, संयोगी, संबंधयुक्त।

''योग्य''-(सं. वि.) जिसमें कोई काम करने की शक्ति या गुण हो, किसी कार्य के लिए उपयुक्त, काबिल, जो किसी कार्य, पद या उपयोग आदि के लिए ठीक हो, विद्या, गुण आदि के विचार से ऊँचे दरजे का और अच्छा, जिसके प्रति कुछ जाना उचित हो, अधिकारी, पात्र आदि।

''योजना''-(स्त्री सं.) उक्त प्रकार की वह रूपरेखा जो अभी कल्पना के क्षेत्र में ही हो, पूरी तरह से निश्चित न हुई हो, कोई कार्य या उद्देश्य सिद्ध करने के उपाय, साधन, व्यवस्था आदि की पहले से निश्चित की हुई रूपरेखा, प्रयोग, व्यवहार।

घटना, प्लान, भावी कार्यपद्धति की पूर्व कल्पना, नियुक्ति, संयोजन, व्यवस्था, आयोजन आदि।

❖❖❖

www.the-comforter.org

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

सद्गुरुदेव की अमर तस्वीर

पूज्य सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग
Sadgurudev Shri Ramlal Ji Siyag

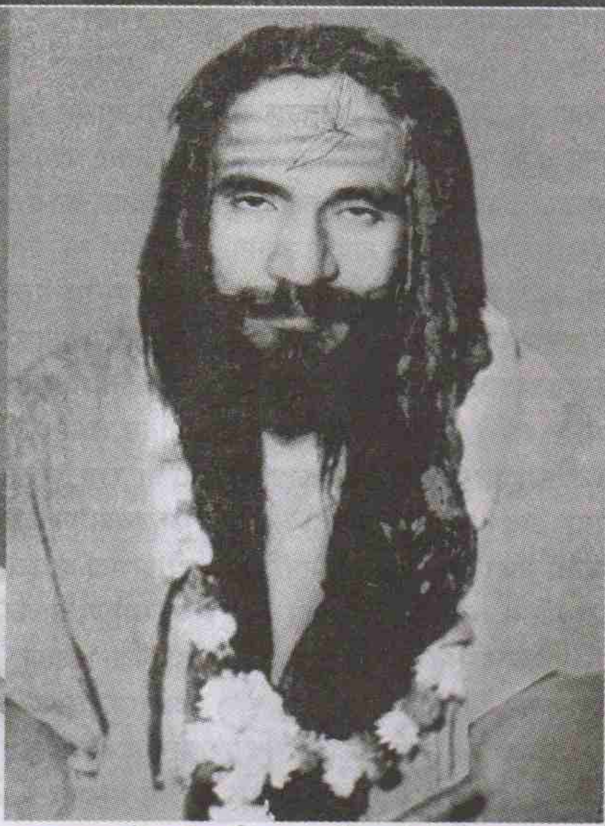

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी(ब्रह्मलीन)
Baba Shri Gangai Nath Ji(Brahmleen)

''देखो, मैं कल्कि अवतार हूँ। मेरी तस्वीर से ध्यान लगता है। मेरे जाने के बाद मेरी 'तस्वीर' तो नहीं मरेगी ! वह आपको 'जवाब' देगी।''

-समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342001
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

www.the-comforter.org

छत्तीसगढ़ के सरगुंजा जिले की अम्बिकापुर तहसील में ध्यान सिद्धयोग शिविर आयोजित। (दिसम्बर 2017)

AVSK शिमोगा टीम-चिक्कमंगलूर (कर्नाटक) के विद्यालयों में ध्यान सिद्धयोग शिविर आयोजित। (दिसम्बर 2017)

अजमेर जिले की विजय नगर तहसील के बाड़ी ग्राम सहित कई गाँवों के विद्यालयों में ध्यान सिद्धयोग शिविर आयोजित। (नवम्बर-दिसम्बर 2017)

www.thecomforter.org

बाड़मेर जिले की चौहटन तहसील के प्रसिद्ध अर्द्धकुंभ सांइया मेला (18-12-2017) व तारातरा गाँव के शहीद धर्माराम मूर्ति अनावरण कार्यक्रम (21-12-2017) में सिद्धयोग प्रदर्शनी का आयोजन। थल सेना अध्यक्ष श्री बिपिन रावत सहित हजारों लोगों को सिद्धयोग दर्शन की जानकारी दी गई। (AVSK बाड़मेर टीम)

सूरत : बाबा श्री गंगाईनाथ जी की बरसी पर साधकों ने पूजा-अर्चना कर, किया ध्यान। (13-12-2017)

www.the-comforter.org

सिद्धयोग साधना से आंतरिक और साहित्यिक विकास

समर्थ सद्गुरुदेव के पावन चरण कमलों में कोटि-कोटि नमन्।

25 फरवरी 2010 को जयपुर में गुरुदेव से शक्तिपात दीक्षा ली। उसके बाद साधना में अनेक उतार-चढ़ाव आए। विभिन्न मुद्राओं का बनना, विभिन्न आसन, भिन्न-भिन्न प्रकार की आवाजों का सुनना, हीलिंग विद्या, भविष्य की घटनाओं का दिखना, यह सब साधना में, सहज ही मेरे साथ घटित हुआ। उसके बाद-समय-समय पर ध्यान के दौरान अंतःप्रेरणा से कई वाक्यांश मेरे मन में उभर आये जो मैंने लिपिबद्ध किया जो इस प्रकार हैं-

ज्ञान बाहर से नहीं, सच्चा आध्यात्मिक ज्ञान तो सदैव अन्दर से मिलेगा। अन्तर्मन से प्रश्न पूछोगे तो सही उत्तर मिलेगा, इसके लिए धैर्यपूर्वक ध्यान के अभ्यास की आवश्यकता है।

लोगों में ज्ञान का आलोक जगाना यही ईश्वरीय कार्य है।

मानव को योग के माध्यम से जीवन को सफल बनाना चाहिए

एक बार कुण्डलिनी जाग्रत होने पर वह स्वतः ही सारे कार्यों का भार अपने ऊपर ले लेती है।

सदैव सद्गुरु के चरणों की वन्दना करना ही उत्तम कार्य है। गुरु ही संसार के भवसागर से पार उतार सकते हैं।

'गुरु' शरीर न होकर एक तत्त्व होता है जो उस व्यक्ति में पूर्ण जाग्रत होता है जो समाधि में पहुँच जाता है। जो तुझे प्राप्त हो रहा है, वह सब मात्र गुरु कृपा का ही फल है। साधना में लगने के बाद व्यक्ति को सिर्फ विश्वास व श्रद्धा रखनी होती है।

यह साधना संसार की सर्वश्रेष्ठ साधना है तो इसके लिए प्रयास भी श्रेष्ठतम करने पड़ेंगे। शरीर को भगवान् बनाना इतना आसान होता तो हर व्यक्ति इस साधना में लग जाता लेकिन लग वही पाता है जिसके कर्म व संस्कार बड़े प्रबल हो जाते हैं, वही शक्तिपात दीक्षा में जा पाता है।

रही सांसारिक बीमारियों की बात तो वह तो कई बार गुरुदेव को देखने मात्र से ही ठीक हो जाती है।

गुरुदेव का मंत्र कल्याणकारी है। जो हजारों लाखों लोगों का कल्याण हो रहा है। संसार में भिन्न-भिन्न मनोवृतियों के लोग हैं, जो समझ नहीं पाते हैं।

योग के रहस्यों को फिर से जाग्रत करना है। सहज रूप से मानव को समझाना है। योग वह फल है जिसको खाने से बीमारियों से मुक्ति व मोक्ष की प्राप्ति होती है। हर मानव तर्क बुद्धि का सहारा लेता है, उससे पार नहीं पड़ेगी।

लेकिन सिद्धयोग करने पर वह स्वयं कुण्डलिनी शक्ति के नियंत्रण में आ जाता है और वही कार्य करता है जो शक्ति स्वयं चाहती है।

प्रकृति ने मनुष्य को स्वतंत्र रखा है वह जिस रास्ते पर जाना चाहता है, उसी रास्ते पर जा सकता है। वह चाहे तो नास्तिक बनकर जीवन जी सकता है उसे उसी प्रकार का फल मिलेगा।

सिद्धयोग तो मनुष्य मात्र का कल्याण करने वाला है। इसमें किसी का अहित नहीं होगा।

लेकिन कुण्डलिनी जागरण पर जो शुरु करने की क्रियाएँ होगी वो सब उनको धैर्यपूर्वक संयम से पूरी करनी होगी। संयम नहीं रखा तो वापस उसी जीवन में लौट जायेगा जैसा जीवन पहले जी रहा था लेकिन जिसके कर्मफल अधिक उन्नत होंगे वह तो कुछ ही वर्षों में सिद्धयोगी बन जायेगा।

मैं पूज्य सद्गुरुदेव के नियमित ध्यान और मत्र जप कर रहा हूँ। उससे मेरे जीवन में अद्भुत बदलाव आया।

सद्गुरुदेव की असीम कृपा से जीवन सफल हो गया।

जय गुरुदेव

-सिद्धेश्वरनाथ
उदयपुर

श्रीमां (पाण्डिचेरी आश्रम)-''यह निश्चित रूप से जानो कि मनुष्य जितने मूर्खतापूर्ण काम कर सकता है, उनमें सबसे बढ़कर मूर्खतापूर्ण काम है-''आत्महत्या''। आत्महत्या शरीर का अंत है, चेतना का नहीं। जो चीज तुम्हें जीते जी तकलीफ दे रही थी, वह मरने के बाद भी तकलीफ देती रहेगी। जीते जी मन को किसी और दिशा में मोड़ने की संभावना रहती है, मरने पर वह भी नहीं रहती है।''

इसलिए उत्तम और देवत्व जीवन जीने के लिए सद्गुरुदेव सियाग प्रदत संजीवनी मंत्र का सघन जप और उनकी तस्वीर का ध्यान करना चाहिए।

मुम्बई में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन

दिनांक 18-23 दिसम्बर 2017 तक अश्विनी हॉस्पीटल, कोलाबा, नेवीनगर के नौसैनिकों के परिवारों व उनकी युनिटों में तथा वहाँ के कई निजी और सरकारी विद्यालयों में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन किया गया। सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग की अमर तस्वीर और संजीवनी मंत्र बड़ा ही अद्भुत परिणाम दे रहे हैं-

-20-12-2017 को एन.टी.आई. (ठाणे) संस्थान में ट्रेनिंग लेने वाले लोगों को गुरुदेव की दिव्य आवाज में मंत्र सुनाकर गुरुदेव की फोटो का ध्यान करवाया गया जिससे कई लोगों को स्वतः यौगिक क्रियाएँ और अनुभूतियाँ होने लगी। एक व्यक्ति को ज्यादा यौगिक क्रियाएँ होने लगी तो उसने सात मिनट में ही ध्यान खोल दिया जोकि उसने बाद में बताया।

-दिनांक 21-12-2017 को रा. मा. वि. ठाणे (एम. एच.) में विद्यार्थियों व शिक्षकों को हॉल में बिठाकर गुरुदेव की दिव्य आवाज में मंत्र सुनाया व गुरुदेव की फोटो पर ध्यान कराया। कई विद्यार्थियों को गहरा ध्यान लगा व यौगिक क्रियाएँ होने लगी। ऐसा प्रथम बार और बहुत ही अद्भुत नजारा देखकर वहाँ के प्रधानाचार्य बहुत ही आश्चर्यचकित हुए।

-दिनांक 21-12-2017 को पुराना नैवी नगर में सिद्धयोग कार्यक्रम था। गुरुदेव की दिव्य आवाज में ''मंत्र'' सुनाकर गुरुदेव की फोटो पर ध्यान किया। ध्यान के दौरान कई लोंगों को स्वतः ही यौगिक क्रियाएँ होने लगी।

- सिद्धयोग कार्यक्रम दिनांक 21-12-2017 को केन्द्रीय विद्यालय न. 3 (कोलाबा) मुम्बई में कक्षा 7 से 10 तक के विद्यार्थियों को गुरुदेव की आवाज में मंत्र सुनाकर गुरुदेव की फोटो पर ध्यान करवाया। ध्यान के दौरान कई बच्चों को प्रत्यक्षानुभूतियाँ हुई। ध्यान के बाद कुछ छात्रों ने अपने अनुभव बताए।

- दिनांक 22-12-2017 को सैंट जेवियर्स इंगलिश स्कूल में लगभग 2000 से ज्यादा विद्यार्थियों व शिक्षकों को तीन अलग-अलग पारी में, सुबह 8 बजे से लेकर 11 बजे तक, गुरुदेव की दिव्य आवाज में ''मंत्र'' सुनाकर व सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देकर गुरुदेव की फोटो पर ध्यान करवाया गया। कई विद्यार्थियों को योग होने लगा व ध्यान की गहराई में चले गये। तथा स्टाफ व विद्यार्थियों ने हमें बताया कि ऐसे वास्तविक योग का परिचय हमने पहली बार किया है।

-आज दिनांक 23-12-2017 को डी.एस.सी. करंजा (एन.ए.डी.) युनिट में गुरुदेव के सिद्धयोग दर्शन की जानकारी दी गई व गुरुदेव की दिव्य आवाज में मंत्र सुनाकर, गुरुदेव की फोटो पर ध्यान करवाया। ध्यान के दौरान कई लोगों को योग स्वतः ही होने लगा। एक व्यक्ति को ''कपाल भाती'' स्वतः ही होने लगी व बहुत ही गहरा ध्यान लग गया। ध्यान समाप्त होने के पश्चात् जब हमने उनसे अपनी अनुभूति बताने के लिए कहा तो वो व्यक्ति 5-7 मिनट तक तो वह कुछ भी बताने की स्थिति में नहीं था। वह गुरुदेव के नाम के नशे में मग्न हो गया।

एक व्यक्ति ने अपने शरीर को

भारहीन महसूस किया। एक व्यक्ति ने पहले दीक्षा ले रखी थी व ध्यान कर रहा था तथा उसने किसी और व्यक्ति धर्मपाल जी को अपने मोबाईल से मंत्र सुनाकर ध्यान करवाया उसको न्युरो (पेरेलाईसिस) की बिमारी थी वह गुरुदेव के ध्यान व मंत्र जप से ठीक हो गई। तथा उसकी शराब व अफीम भी छूट गई।

इस स्कूल में कार्यक्रम की

परमिशन के लिए जब हम लोग गये तो मैंने मेरे साथ गये गुरुभाई जगदीश जी को बताया, जो ठाणे में रहते हैं, कि इस स्कूल का नाम सैंट जेवियर्स है तो ये अपने को कार्यक्रम की परमीशन नहीं देंगे, इसलिए हम किसी अन्य स्कूल में चलते हैं तो गुरुभाई ने कहा कि यह स्कूल हिंदुओं की है व हमारे को परमीशन दे देंगे। तब मैं उनकी बात मान कर, परमीशन हेतु अंदर जा रहा था, तब मैं मन में सोच रहा था कि इतनी बड़ी स्कूल जिसमें कक्षा 1 से लेकर 12 तक लगभग 5000 बच्चे पढ़ते हैं हमें परमीशन मुश्किल ही मिलेगी। लेकिन जब हम लोग उस स्कूल के मालिक के चेम्बर में गये व गुरुदेव के सिद्धयोग दर्शन के बारे में बताया तो तत्काल विद्यालय के व्यवस्थापक ने अपने स्टाफ को बताया कि यह 'वास्तविक भारतीय योग' है।

यह हमारी स्कूल में कक्षा 6 से लेकर 12 तक के सभी बच्चों को कार्यक्रम में शामिल किया जाय व कार्यक्रम हेतु पूर्ण व्यवस्था भी की जाय। तब मैंने पहली बार महसूस किया कि इस देश में इस वास्तविक भारतीय योग को मानने वाले लोग भी है। एक और बात का अनुभव हुआ कि हमें पहले ही कोई धारणा नहीं बनानी चाहिए कि ये स्वीकृति देंगे या नहीं। बल्कि हमें सार्थक प्रयास करना चाहिए। यहाँ गीता वाली बात सिद्ध होती है कि 'तू तो अपना कर्म कर, फल की इच्छा मत कर।' इस विद्यालय के अनुभव बहुत ही अच्छे रहे।

– मैं सुबेदार परमजीतसिंह-मेरे कमर में दर्द रहता था। तनाव ग्रस्त था। दवाईयाँ लेता था लेकिन समस्या का कोई समाधान नहीं हो रहा था। दिनांक 23-12-2017 को डी. एस. सी. युनिट करंजा (मुम्बई) में गुरुदेव का सिद्धयोग कार्यक्रम हुआ जिसमें हमें एक मंत्र जपने के लिए बताया गया व 15 मिनट का ध्यान करने के लिये बताया।

मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि मंत्र जप व ध्यान से रोगों से मुक्ति व तनाव से मुक्ति कैसे संभव होगी? लेकिन मैंने ज्योंहि नाम जप व ध्यान किया तो मेरे शरीर में तरह-तरह की यौगिक क्रियाएँ होने लगी। मन में असीम शांति का एहसास हुआ। मुझे पूर्ण विश्वास हो गया कि हर मर्ज की दवाई-गुरुदेव की तस्वीर का ध्यान और उनकी दिव्य वाणी में दिया गया संजीवनी मंत्र है।

अब मैं नियमित मंत्र जप व ध्यान कर रहा हूँ। मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। मुझमें सकारात्मक सोच पैदा हुई है। इस सिद्धयोग दर्शन के बारे में, मैं अन्य जिज्ञासु लोगों को भी बताता रहता हूँ।

–सांगाराम चौधरी
व मोहनसिंह गौड़
मुम्बई

"अन्तर्मुखी आराधना के बिना उस परमसत्ता का साक्षात्कार असंभव है, परन्तु उस पथ पर चलने के लिए 'चेतन पुरुष' का पथ प्रदर्शन और सहारा नितांत आवश्यक है।"

–सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

गतांक से आगे....

हठयोग

हठयोग एक शक्तिशाली, पर कठिन और कष्टप्रद प्रणाली है। इसकी क्रिया का सारा सिद्धान्त इस तथ्य पर आधारित है कि शरीर और आत्मा में घनिष्ठ सम्बन्ध है। जबकि सिद्धयोग एक सरल प्रक्रिया है जो आम आदमी कर सकता है। इस पथ पर आराधना का सारा भार गुरु अपने ऊपर लेता है।

ये दोनों ही यन्त्र आज हमारे स्वामी हैं। हम शरीर के दास हैं, हम प्राणशक्ति के अधीन हैं; यद्यपि हम आत्मा हैं, मनोमय प्राणी हैं तथापि अत्यन्त परिमित अंश में ही हम इनके स्वामी होने की वृत्ति को धारण कर सकते हैं। हम एक तुच्छ एवं सीमित भौतिक प्रकृति से बंधे हैं, और परिणामस्वरूप एक तुच्छ एवं सीमित प्राणशक्ति से भी बंधे हैं; हमारा शरीर बस इसी प्राणशक्ति को धारण करने में समर्थ है अथवा इसीको कार्यक्षेत्र प्रदान कर सकता है।

इसके अतिरिक्त, हमारे अन्दर इनमें से प्रत्येक की तथा दोनों की क्रिया क्षुद्रतम सीमाओं के ही नहीं, बल्कि सतत् अशुद्धता के भी अधीन है; हर बार जब कि इस अशुद्धता को सुधारा जाता है यह फिर पैदा हो जाती है। साथ ही, इनकी क्रिया सब प्रकार की गड़बड़ियों की शिकार भी होती रहती है जिनमें से कुछ तो इनका सामान्य अंग-सी हैं, एक प्रकार की उग्र अवस्था है, हमारे साधारण एवं स्थूल जीवन का भाग हैं; उनके अतिरिक्त कुछ अन्य अन्य गड़बड़ियां भी हैं जो असामान्य ढंग की हैं, अर्थात् इनकी व्याधियाँ और अस्तव्यस्त स्थितियाँ हैं।

हठयोग को इन सबसे निपटना होता है; उसे इन सब पर विजय पानी होती है; और यह कार्य वह मुख्यतः इन्हीं दो पद्धतियों के द्वारा करता है; इनकी क्रिया तो जटिल और कष्टप्रद है, पर इनका मूल सिद्धान्त सीधा-सादा है और साथ ही ये प्रभावशाली भी हैं।

हठयोग की आसन-प्रणाली के मूल में दो गंभीर विचार निहित हैं जिनसे अनेक प्रभावपूर्ण फलितार्थ निकलते हैं। पहला है शरीर की निश्चलता के द्वारा आत्मनियन्त्रण का विचार, दूसरा है निश्चलता के द्वारा शक्ति की प्राप्ति का विचार। शारीरिक निश्चलता की शक्ति हठयोग में उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जितनी ज्ञानयोग में मानसिक निश्चलता की शक्ति, और इन दोनों के महत्त्व के कारण भी एक-से ही हैं।

हमारी सत्ता और प्रकृति के गंभीरतर सत्यों के प्रति अनभ्यस्त मन को ये दोनों ऐसी प्रतीत होंगी मानो ये जड़ता की उदासीन निष्क्रियता, की खोज कर रही हों। पर सत्य इससे ठीक उल्टा है; क्योंकि यौगिक निष्क्रियता, वह चाहे मन की हो या शरीर की, शक्ति को अधिक बढ़ाने, अधिकृत और संयमित करने की शर्त है।

हमारे मनों की सामान्य क्रिया अधिकांश में एक प्रकार की अव्यवस्थित चंचलता है, इस क्रिया में शक्ति का क्षय होता है किंवा उसे परीक्षणों के रूप में वेगपूर्वक लुटाया जाता है; शक्ति के इस व्यय-अपव्यय में से केवल थोड़ा-सा अंश ही एक आत्मप्रभुत्वपूर्ण संकल्प के क्रिया-व्यापार के लिये चुना जाता है-यहाँ यह समझ लेना होगा कि शक्ति का यह व्यय इस दृष्टिबिन्दु से ही अपव्यय कहलाता है न कि विश्व-प्रकृति के दृष्टिबिन्दु के अनुसार उसकी अपनी मितव्ययपूर्ण व्यवस्था के उद्देश्यों में सहायक होता है। हमारे शरीरों की चेष्टा भी एक उक्त प्रकार की चंचलता है।

यह इस बात का चिह्न है कि शरीर में जो परिमित-सी प्राण-शक्ति प्रविष्ट या उत्पन्न होती है उसे भी वह धारण करने में सदा असमर्थ रहता है; परिणामतः, यह इस बात का भी चिह्न है कि यह प्राण-शक्ति सामान्य रूप से ही विकीर्ण होती रहती है और व्यवस्थित एवं परिमितव्यय-युक्त क्रिया का तत्त्व तो सर्वथा गौण ही होता है।

अपिच, फलस्वरूप, जो प्राणिक शक्तियाँ शरीर में साधारणतः कार्य करती हैं उनकी गति और परस्पर क्रिया के बीच जो आदान-प्रदान एवं सन्तुलन स्थापित होता है उसमें तथा जो शक्तियाँ शरीर पर बाहर से क्रिया करती हैं, वे चाहे दूसरों की हों या चारों ओर के वातावरण में विविध रूप से कार्य करनेवाली सार्वभौम प्राणशक्ति की, उनके साथ इन पूर्वोक्त शक्तियों का जो आदान-प्रदान चलता है। उसमें निरन्तर ही एक अनिश्चित संतुलन एवं सामंजस्य स्थापित होता रहता है जो किसी भी क्षण बिगड़ सकता है।

हठयोग में जहाँ प्रत्येक क्रिया हठ पूर्वक की जाती है, वही सिद्धयोग में गुरु कृपा से सहत में होती है।

-श्री अरविन्द, 'योग समन्वय' पुस्तक से

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

अहं से मुक्ति

व्यक्ति इस अंश में समूह से महान् है और अपनी अधिक प्रकाशमय सम्भावनाओं को इस अधिक अन्धकारपूर्ण सत्ता के अधीन कर देने के लिये उससे अनुरोध नहीं किया जा सकता। यदि **प्रकाश, शान्ति, मुक्ति**, जीवन की एक अधिक उत्तम अवस्था प्राप्त होनी ही है तो ये हमारी आत्मा में किसी ऐसी सत्ता से ही अवतरित होगी जो व्यक्ति से अधिक विशाल हो, पर साथ ही जो सामूहिक अहं से **अधिक उच्च** भी हो।

परोपकार, लोकहित, मानवजाति की सेवा अपने-आपमें मानसिक या नैतिक आदर्श हैं, **आध्यात्मिक जीवन के नियम नहीं**। यदि आध्यात्मिक लक्ष्य के अन्तर्गत वैयक्तिक '**स्व**' का परित्याग करने अथवा मानवजाति या समूचे विश्व की सेवा करने का आवेग उठता है तो यह अहं से या मानवजाति की **समष्टि-भावना** से नहीं, बल्कि इन दोनों से परे किसी अधिक गुह्य एवं **गम्भीर तत्त्व** से ही उठता है।

क्योंकि, यह इस अनुभूति पर आधारित होता है कि भगवान् सबमें हैं और यह अहं या मानवजाति के लिये नहीं, बल्कि भगवान् के लिये तथा व्यक्ति या समूह या **समष्टि-मानव** में निहित उनके प्रयोजन के लिये ही कार्य करता है।

सबके आदिमूल में इन **परात्पर भगवान्** की ही हमें खोज और सेवा करनी होगी, उस बृहतर सत् और चित् की जिसके निकट मानवजाति और व्यक्ति उसकी **सत्ता के गौण** रूप हैं।

इसमें सन्देह नहीं कि व्यवहारवादी की प्रेरणा के पीछे भी एक सत्य है जिसकी अन्य-वर्जक एकांगी **अध्यात्मवाद** उपेक्षा कर सकता है या जिसे वह अस्वीकार कर सकता या तुच्छता की दृष्टि से देख सकता है।

वह सत्य यह है-क्योंकि व्यक्ति और विश्व उस उच्चतर और बृहत्तर सत् के रूप हैं, उस परम सत् में इनकी **चरितार्थता** का कोई वास्तविक स्थान अवश्य होना चाहिये। इनके पीछे **परम प्रज्ञा** और ज्ञान का कोई महान् प्रयोजन, **परम आनन्द** का कोई **शाश्वत स्वर** अवश्य होना चाहिये: इनकी रचना व्यर्थ में की गयी नहीं हो सकती, यह व्यर्थ में की ही नहीं गयी।

परन्तु व्यक्ति की पूर्णता और संतुष्टि की भांति मानवजाति की पूर्णता और सन्तुष्टि का आधार भी वस्तुओं के एक अधिक **शाश्वत** पर अभी तक अनधिगत सत्य और यथार्थ रूप पर ही सुरक्षित रूप से रखा जा सकता है और उसी आधार पर इन्हें सुरक्षित रूप से साधित भी किया जा सकता है। किसी महत्तर '**सत्**' के गौण रूप होने के कारण ये अपने-आपको तभी चरितार्थ कर सकते हैं जब कि, जिसके ये रूप हैं, वह ज्ञात और प्राप्त हो जाये।

मानवजाति की सबसे महान् सेवा, इसकी सच्ची उन्नति, सुख-सम्पदा और पूर्णता का सबसे अधिक सुनिश्चित आधार उस मार्ग को तैयार करना या ढूँढ़ना है जिसके द्वारा व्यष्टि और समष्टि-मानव अज्ञान, अक्षमता, असामंजस्य और दुःख के साथ न बंधे रहकर **अपने अहं के परे जा सकें** तथा अपनी सच्ची आत्मा में निवास कर सकें। हमारे आधुनिक चिन्तन और आदर्शवाद ने हमारे सामने जो विकासमूलक, सामूहिक एवं परार्थवादी लक्ष्य रखा है उसे भी हम **सर्वोत्तम** एवं सुनिश्चित रूप से तभी प्राप्त कर सकते हैं यदि हम प्रकृति के मंद सामूहिक विकास में न बंधे रहकर **सनातन तत्त्व** का अनुसंधान करें।

परन्तु वह भी अपने-आपमें एक गौण लक्ष्य है; **भागवत सत्ता, चेतना एवं प्रकृति को ढूंढना, जानना और प्राप्त करना और उसी में भगवान् के लिये निवास करना ही हमारा सच्चा लक्ष्य एवं एकमात्र पूर्णता है जिसे प्राप्त करने के लिये हमें अभीप्सा करनी होगी।**

अतएव, उच्चतम ज्ञान के अन्वेषक को किसी संसारबद्ध जड़वादी सिद्धान्त के नहीं, वरन् आध्यात्मिक दर्शनों और धर्मों के मार्ग पर ही चलना होगा, यद्यपि उसे समृद्ध लक्ष्यों तथा अधिक व्यापक आध्यात्मिक प्रयोजन को लेकर ही अग्रसर होना होगा। परन्तु अहं के उन्मूलन के मार्ग पर उसे कितनी दूर तक आगे जाना होगा? प्राचीन ज्ञानमार्ग में हम उस **अहं-बुद्धि** के उन्मूलन तक पहुँचते हैं जो शरीर, प्राण या मन के साथ अपने-आपको आसक्त कर लेती है और उन सबके या उनमें से किसी एक के बारे में कहती है, "**यह मैं हूँ।**"

-श्री अरविन्द, 'योग समन्वय' पुस्तक से

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

समाधि

समाधि की अवस्था में जीवन का त्याग करने से वह सीधे ही सत्ता की उस उच्चतर भूमिका को प्राप्त कर लेता है, जिसकी वह अभीप्सा करता है।

अन्त में, योगी विकास की एक विशेष अवस्था में ऐसी शक्ति प्राप्त कर लेता है कि वह अपने शरीर को मृत्यु की साधारण **क्रिया-शृंखला** के बिना ही अपने **इच्छाबल** का प्रयोग करके, निश्चित रूप से त्याग सकता है या फिर वह एक और प्रक्रिया के द्वारा अर्थात् **ऊर्ध्वमुखी प्राणधारा** (उदान) के द्वार से **प्राणात्मक जीवन-शक्ति** को खींचकर तथा उसके लिये सिर में गुह्य **ब्रह्मरन्ध्र** में से निकलने का मार्ग खोलकर भी शरीर को त्याग सकता है।

समाधि की अवस्था में जीवन का त्याग करने से वह सीधे ही सत्ता की उस **उच्चतर भूमिका** को प्राप्त कर लेता है जिसकी वह **अभीप्सा** करता है।

स्वयं स्वप्न-अवस्था में भी अनन्त प्रकार की गहराइयाँ हैं, कम गहरी स्वप्न-अवस्था से आत्मा को वापस बुलाना आसान होता है और स्थूल इन्द्रियों का जगत् अत्यन्त निकट होता है, यद्यपि कुछ समय के लिये यह बहिष्कृत रहता है; अधिक गहरी स्वप्नावस्था में यह बहुत दूर चला जाता है और अन्तर्मग्नता की अवस्था को भेदने में अपेक्षाकृत असमर्थ होता है, क्योंकि मन समाधि की सुरक्षित गहराइयों में प्रवेश पा चुकता है।

समाधि और **सामान्य निद्रा** में अर्थात् योग की स्वप्नावस्था और स्वप्न की भौतिक अवस्था में जरा भी समानता नहीं है। इनमें से पिछली तो स्थूल मन की एक अवस्था है; पहली में वास्तविक एवं सूक्ष्म मन की एक अवस्था है; पहली में वास्तविक एवं **सूक्ष्म** मन के मिश्रण से मुक्त होकर कार्य करता है। स्थूल मन के स्वप्न कई वस्तुओं का एक असंबद्ध मिश्रण होते हैं। वे वस्तुएँ ये हैं-एक तो स्थूल जगत् के अस्पष्ट संपर्कों के प्रति की गयी प्रतिक्रियाएँ, संकल्प-शक्ति और बुद्धि से विच्छिन्न हुई मन की निम्नतर शक्तियाँ इन सम्पर्कों के चारों ओर एक विशृंखल कल्पना का जाल बुन डालती हैं; दूसरे, मस्तिष्कगत स्मृति में

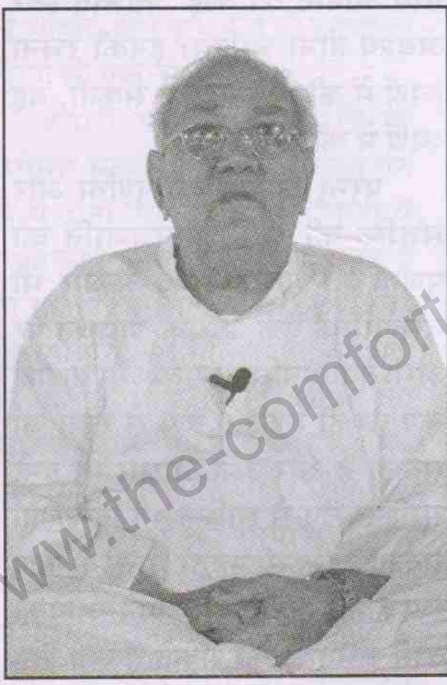

से उठनेवाले अव्यवस्थित संस्कार; तीसरे, मानसिक स्तर पर विचरती हुई आत्मा से मन पर पड़ने वाले प्रतिबिम्ब, ये प्रतिबिम्ब साधारणत: बिना समझे या सुसंगत किये ग्रहण कर लिये जाते हैं, ग्रहण करते समय प्रबल रूप से विकृत हो जाते हैं तथा स्वप्न के अन्य तत्त्वों अर्थात् मस्तिष्कवर्ती स्मृतियों के साथ एवं **स्थूल जगत्** से आनेवाले किसी भी इन्द्रिय-स्पर्श के प्रति मनमौजी प्रतिक्रियाओं के साथ अव्यवस्थित रूप में मिश्रित हो जाते हैं।

इसके विपरीत, योग की **स्वप्नावस्था** में मन स्थूल जगत् से न सही पर अपने-आपसे स्पष्ट रूप में सचेतन होता है, सुसंगत रूप में कार्य करता है और या तो अपने साधारण संकल्प एवं बुद्धि का **एकाग्र शक्ति** के साथ प्रयोग कर सकता है या फिर मन के अधिक उन्नत स्तरों के उच्चतर संकल्प और बुद्धि को उपयोग में ला सकता है। वह बाह्य जगत् के अनुभव से दूर हट जाता है तथा स्थूल इन्द्रियों को एवं जड़ पदार्थों के साथ सम्पर्क स्थापित करनेवाले इन्द्रिय-द्वारों को मजबूती से बन्द कर देता है; परन्तु अपनी प्रत्येक विशिष्ट क्रिया को अर्थात् चिन्तन, तर्कणा, प्रतिबिम्ब-ग्रहण और अन्तर्दर्शन को वह श्रेष्ठ एकाग्रता की बढ़ी हुई शुद्धता और शक्ति के साथ सम्पन्न करता रह सकता है। वह **एकाग्रता** जाग्रत् मन के विक्षेपों एवं उसकी **अस्थिरता** से मुक्त होती है। साथ ही, वह अपने संकल्प को प्रयोग करके अपने ऊपर या अपने चारों ओर के प्राणियों एवं पदार्थों के ऊपर मानसिक, नैतिक एवं भौतिक प्रभाव भी उत्पन्न कर सकता है। वे प्रभाव स्थिर रह सकते हैं तथा समाधि की समाप्ति के बाद आनेवाली जाग्रत् अवस्था में अपने फल प्रकट कर सकते हैं।

-श्री अरविन्द, 'योग समन्वय' पुस्तक से

क्रमश: अगले अंक में...

www.the-comforter.org

सघन नाम जप द्वारा नशों से छुटकारा

स्वामी विवेकानन्द जी ने अमेरिका में किसी अमेरिकन्स के पूछने पर व्यक्ति की वृत्ति कैसे परिवर्तित होती है, इस संबंध में बड़ा सटीक जवाब दिया-You need not to give up the things; the things will give up you. "आपको उन वस्तुओं को छोड़ने की आवश्यकता नहीं है, वह वस्तुएँ आपको छोड़कर चली जाएगी" फिर क्या करोगे ? तो आप में जो परिवर्तन आएगा, वो इस नाम जप से The things will give up you के हिसाब से आएगा, न कि बुद्धि के प्रयास से !

अगर आप Seriously (गंभीरता से) नाम जपोगे तो निश्चित रूप से सभी नशे छूट जाएंगे। आपको छोड़कर चले जाएंगे; नशे आप नहीं छोड़ोगे। उनको नशे की बात करता हूँ तो स्वामी विवेकानन्द जी का एक Sentence (वाक्य) याद आ जाता है। अमेरिका में स्वामी जी कहीं प्रवचन कर रहे थे तो एक अमेरिकन्स ने कहा महाराज लम्बे चौड़े लेक्चर झाड़ रहे हो, आपके-हमारे सौदा नहीं बैठेगा। आप के धर्म में तो शाहाकारी और माँसाहारी बड़ा सख्त सिद्धान्त है।

हम सारे के सारे माँस खाने वाले लोग है तो स्वामी जी ने चलते Speech (प्रवचन) में कह दिया-You need not to give up the things; the things will give up you. आपको उन वस्तुओं को छोड़ने की आवश्यकता नहीं है, वह वस्तुएँ आपको छोड़कर चली जाएगी' फिर क्या करोगे ? तो आप में जो परिवर्तन आएगा वो इस "नाम जप" से The things will give up you के हिसाब से आएगा न कि बुद्धि के प्रयास से !

इसलिए मैं कह दिया करता हूँ-शराब पी रहे हो तो एक की जगह डेढ़ बोतल शुरू कर दो, मत छोड़ो, अफिम थोड़ा ज्यादा लेना शुरू कर दो, लोग तो कहते हैं-छोड़ दो; मैं तो कहता हूँ मत छोड़ो। मगर नाम को भी मत छोड़ो तो फिर कितने दिन करोगे ? चैलेंज के साथ मैंने लाखो को छुड़वा दिया। अगर नाम जप Seriously (गंभीरता से) करोगे तो नशा आपको छोड़ जाएगा, इसमें कोई आश्चर्य नहीं है, वृति बदल जाएगी।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

"मानव शरीर में देव और दानव का युद्ध"

सात्त्विक वृत्ति अर्थात् देवत्व के विकास से दानवीय वृत्ति अर्थात् सभी रोगों व नशों से पूर्ण मुक्ति संभव।

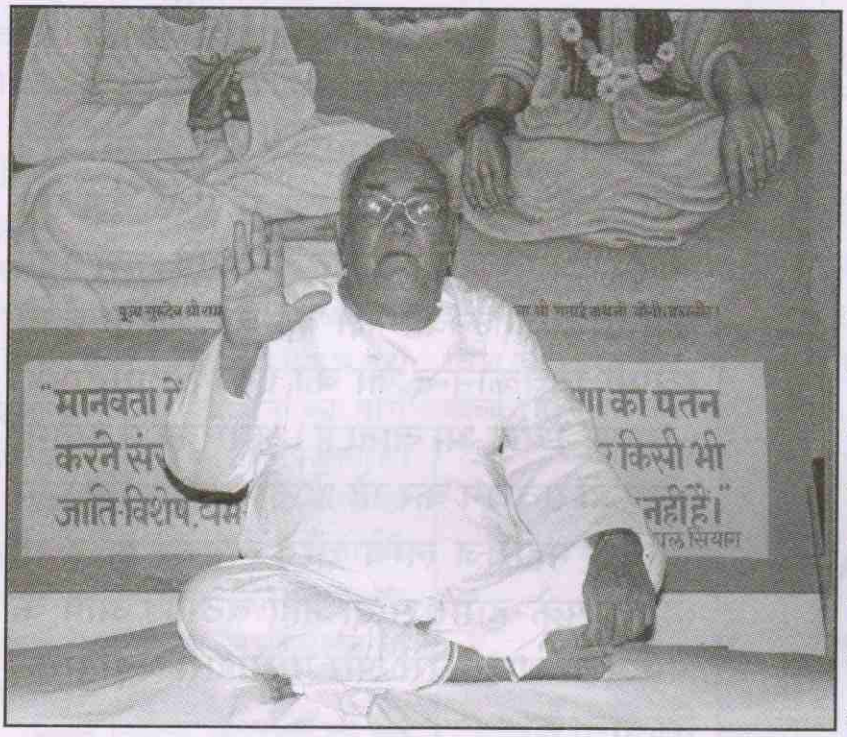

देव और दानव का संघर्ष मनुष्य के अन्दर अनादि काल से चला आया है। दानव प्रभावी हो जाता है तो आदमी को यह नुकसान (तामसिक खान-पान, रोगों व नशों से युक्त और बुरा सोचने वाला) होता है। जब देव प्रभावी हो जाता है तो आदमी सात्त्विक हो जाता है। पातंजलि योग दर्शन में भी **कैवल्यपाद** के दूसरे सूत्र में जाति परिवर्तन की बात कही है। ऋषि ने **जात्यान्त्रण** की बात स्वीकार की है।

पहले-पहले कई लोग मुझे कहा कहते थे-यह रोग ऐसे ही ठीक हो जाते हैं तो अस्पताल बंद कर दें क्या? मैंने कहा भईया आपको इस दर्शन की जानकारी नहीं है; अधूरी जानकारी है। इसलिए कह रहे हो। पातंजलि ऋषि ने '**कैवल्यपाद**' के पहले-पहले सूत्र में इस परिवर्तन के आने के लिए पाँच कारण बताये हैं। पहला तो **पूर्वजन्म** के संस्कार से परिवर्तन आना संभव है दूसरा **जप** से तीसरा **तप** से चौथा **योग** से पाँचवाँ **औषधि** से भी यह परिवर्तन संभव है, पातंजलि ऋषि स्वीकार करते हैं।

आज तो हम जो जहर खा रहे हैं वो तो पश्चिम की देन है। **भारतीय औषधि विज्ञान** में तो **कायाकल्प** तक का वर्णन आता है। मगर वह दर्शन तो लोप हो गया। हमारे पतन के साथ वह सब कुछ लोप हो गया। मुसलमानों ने, ईसाईयों ने वह ग्रंथ जला दिये। आज उसको उठने नहीं दे रहे हैं। आर्थिक कारणों से दबाए रख रहे हैं तो हमारा दर्शन जो है पाँच तरह से इस परिवर्तन को स्वीकार करता है, औषधि से भी करता है तो इस प्रकार आप नाम जप और ध्यान करोगे तो आप में यह परिवर्तन आएगा। योग होगा, नाम का नशा आएगा और वृत्ति बदल जाएगी-उससे शारीरिक रोग खत्म, मानसिक रोग खत्म, नशों से छुट्टी तो यह जीवन तो सुधर ही गया।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

आध्यात्मिक ज्ञान क्रांति में

"युवाओं की भूमिका"

हमारे लोगों ने दो बड़ी गलती कर दी, मेरे हिसाब से। एक तो परलोक के लालच में यह (भौतिक) लोक बिगाड़ दिया, इस लोक में भौतिक रूप से परिवर्तन नहीं आएगा, रोटी नहीं मिलेगी तो राम याद नहीं आएगा, इसलिए आराधना से पहले भौतिक जीवन में परिवर्तन आएगा।

और दूसरा, 'राम' का नाम बुढ़ापे में ले लेंगे। अब यह जवान छोरे नहीं समझते कि बुढ़ापा चीज क्या होता है? 70 साल से ऊपर निकले, उनसे पूछो, सौ तरह के रोग लग जाते हैं शरीर में और रोग की तरफ ध्यान जाता है, राम की तरफ जाता ही नहीं, केवल पछताना ही शेष रहता है।

इसलिए यह परिवर्तन भी युवावस्था में ही आना चाहिए। मेरे शिष्यों में 90 प्रतिशत से ज्यादा युवा लोग हैं और खास तौर से साइन्स (विज्ञान) के लोग हैं और मैं मानकर चलता हूँ कि धार्मिक जगत् में कोई क्रांति करनी है तो युवा वर्ग जब तक चेतन नहीं होगा तब तक परिवर्तन संभव नहीं है। परिवर्तन या क्रांति अगर लानी हो तो युवा वर्ग ही लाया है। आज तक लाया है आगे भी लाएगा।

अब दूसरे आराधना के तरीके रिजल्ट नहीं दे रहे हैं इसलिए वहाँ नहीं जाते हैं। मेरे पास इसलिए आते हैं कि इसमें बड़ा अजीब तरीके से युवाओं में परिवर्तन हो रहा है। ध्यान करने लगते हैं तो Concentrate(एकाग्र) हो जाता है। उनका मन अगर यहाँ पर (आज्ञाचक्र) एकाग्र हो जाए तो फिर किताब में भी एकाग्र हो जाता है। 3rd Division (तृतीय श्रेणी) पास करने वाला First Division (प्रथम श्रेणी) में आ रहा है और मानसिक तनाव न होने से पढ़ाई में बड़ा मन लगता है तो मनुष्य जाति में यह एक क्रियात्मक बदलाव है। अपनी शक्तियों को चेतन करके लाभ उठाना यह कोई जादू नहीं है। यह मानव में Due (बाकी) था। मानव जाति में यह विकास होना संभव है। Due था शुरू हो गया, कोई Abnormal (असाधारण) बात नहीं हो रही है।

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

चेतना का विज्ञान

श्री अरविन्द
'मानव से अतिमानव की ओर'

शरीर अन्य शरीरों से वैश्व भौतिक द्रव्य के हस्तक्षेप के कारण अलग है। परंतु दोनों अलग-अलग शरीर अविभाज्य हस्तक्षेप करनेवाले भौतिक द्रव्य के साथ एक है। अतः वास्तव में अलग नहीं है, अपनी ऊर्जा में **अविभाज्य** रूप से जुड़े हुए हैं और भौतिक वास्तविकता में एक ही भौतिक द्रव्य है।

और तरह से कहा जाय तो दो शरीर अविभाज्य आकाशीय देश के बिंब या रचनाएँ हैं जो वस्तुतः भौतिक ऊर्जा, प्राणिक ऊर्जा और मानसिक ऊर्जा की अविभाज्य गति है।

जब हम चेतना के आभासों का उसकी वास्तविकता के साथ जो संबंध है उसकी परीक्षा करते हैं तो शरीर के इस अविभाज्य संबंध और उनकी आधारभूत एकता का बहुत अधिक महत्त्व हो उठता है। शरीर के अंदर मन का आरंभ होता है। शरीर की विशिष्ट पृथकता से। शरीरस्थ मन अपने मूल-कर्म में विश्व की **पृथक्कारी दृष्टि** से बंधा रहता है। यह उसकी जाग्रत दृष्टि है। **अंतर्लीन अवस्था में**, चाहे अवचेतन मानस में या वहाँ जहाँ अतिचेतन सत्ता का स्पर्श करता या उसके पास पहुँचता है, वह इस **कृत्रिम पृथकता** को पाटने में समर्थ होता है।

जाग्रत चेतना के इस **पृथक्कारी** आधार को स्वयं अपने रूप में लेकर, उसे वास्तविक मानकर, उस कारा-रूद्ध अभिज्ञता के आवास में से मन, जगत् पर नजर डालता है, और वह वस्तुओं को अपनी अभिज्ञता और सचेतन दृष्टि के बाहर देखने के लिये बाधित है। सशरीर मन ऐसा है मानो किसी **परकोटे** वाले मकान में एक **चिंतनशील** अंतरात्मा और आत्मा (वायु और आकाश) हो, और वह उन चीजों को जो उसके अपने अंदर नहीं हैं खिड़की के (इन्द्रियों के) बाहर की चीजों के रूप में देखें, बाहर की वायु स्पर्श को (स्नायविक जीवनसंघात) ग्रहण करे मानो वह उसके अंदर की वायु से भिन्न है, उसका अपना आकाश अन्य आकाश से भिन्न है-(मेरी अंतरात्मा

तथा अन्य अंतरात्माएँ) यही हमारे मानस की आत्मा और अंतरात्मा तथा अनात्मा है।

अंतर्निहित मन, सामान्यतः अभ्यस्त न होने पर भी इस योग्य होता है कि आत्मा और अनात्मा के बीच की खाई को पाट सके। जहाँ वह अति चेतन के निकट पहुँचता है वहाँ यह खाई संकरी होती जाती है और सत्ता में ऐक्य की चेतना बढ़ती जाती है।

शरीर इस उग्र **पृथक्कारी व्यक्तीयन** यंत्र और उसका आधारमात्र है, उसका प्रथम कारण नहीं। स्वयं मन प्राथमिक कारण है लेकिन यह जरूरी नहीं है कि स्वयं मानसिकता कठोर रूप से पृथक्कारी हो, विशेष रूप से अंतर्लीन मन के अंदर एकीकरण लानेवाली बहुत बड़ी शक्ति है। अपने आप में मन एक सापेक्ष पृथक्कारी अनेकात्मक आधार मात्र है। शरीरस्थ मन इस संबंध को निरपेक्ष पृथक अनेकत्व के आभास में बदल देता है। इस बहिर्मुखा करने वाले व्यक्तीयन और पृथक्कारी अनेकत्व के इस आधार से भौतिक विश्व में जाग्रत मानसिक चेतना अपनी क्रियाएँ शुरू करती हैं।

मनोविज्ञान चेतना और उसकी क्रियाओं का ज्ञान है।

पूर्ण मनोविज्ञान की मन के विज्ञान, उनकी क्रियाओं , उनके प्राण तथा शरीर के साथ संबंध का संकुल होना चाहिये जिसमें मन के स्वभाव और अतिमानस तथा आत्मा के साथ उसके संबंधों का अंतर्भासात्मक परीक्षणात्मक ज्ञान हो।

पूर्ण मनोविज्ञान शुद्ध रूप से प्राकृतिक विज्ञान नहीं हो सकता। उसे विज्ञान और तत्त्वज्ञानात्मक ज्ञान का मिश्रण होना चाहिये। यह आवश्यकता प्राकृतिक या भौतिक विज्ञान तथा मनोविज्ञान के भेद से उठती है।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

અદ્ભૂત સિદ્ધયોગ

અથવા રોજ કામે જતા બસ કે ટ્રેનમાં પણ પંદર મિનીટ ધ્યાન કરી લે છે.

ગુરુદેવની આરાધનામાં જપ અને ધ્યાન મૌન હોવાથી સાધક એની આરાધના સહેલાઈથી અને બીજા કોઈને તકલીફ આપ્યા વગર કરી શકે છે.

★★★

૬. સિદ્ધયોગ સાધનાના દૃશ્ય પરિણામો

સિદ્ધયોગ સાધનાના દૃશ્ય પરિણામશું હોય છે?

ગુરુદેવ સિયાગ બધા સાધકોને દીક્ષા તો સામૂહિક રીતે એક સરખી જ આપે છે માત્ર એના પરિણામસ્વરૂપે થતા અનુવો અલગ અલગ સાધકો માટે અલગ અલગ હોય છે. આમાંથી કેટલાક સાધારણ રીતે જોવામાં આવેલ અનુભવો નીચે પ્રમાણે છે.

(૧) શરીર ધ્રુજારી આવે.

(૨) શરીર ડોલવા માંડે

(૩) કપાળ ઉપર આજ્ઞાચક્ર પર ભાર લાગે છે

(૪) શરીરમાં ગરમી અનુભવવામાં આવે છે. કેટલાકને પરસેવો છૂટે છે.

(૫) ઘણા હસે છે, તો ઘમા રડે છે. કોઈ કોઈ તો ચીસો પાડે છે.

(૬) માથું ભારે લાગે છે.

(૭) ડોક ગોળ ગોળ ફેરવે છે.

(૮) શરીર ગોળ ગોળ ઘુમે છે. શરીર જમીન પર આળોટે છે.

(૯) કોઈને એમના કરોડરજ્જુ પર વિજળી જેવા કરંટ ધડધડાટ ઉપર નીચે ચઢતો ઉતરતો હોય તેવું લાગે છે.

(૧૦)કેટલાક સાધકો ધ્યાનમાં યોગિક આસનો આપમેળે થાય છે. અભણ કે યોગ વિશે કોઈ પણ જાણકારી ન હોવા છતાં કેટલાક સાધકોને અદ્ભૂત અને અસાધ્ય યોગિક આસનો પણ થાય છે.

(૧૧) કોઈને દેવી -દેવતાના દર્શન થાય છે.

(૧૨) કોઈને જ્યોતિદર્શન, પ્રકાશ અને રંગ, અનાહદ નાદ, દિવ્ય સુગંધ અથવા અવાજો, સંભળાય છે.

(૧૩) કોઈને ભૂતકાળમાં થયેલ અથવા તો ભવિષ્યમાં થનારી ઘટનાઓ દેખાય છે. આ ઘટનાઓ વ્યકિતગત જીવન વિશે અથવા તો દેશવિદેશનો સંબંધ રાખતી હોય છે. કેટલાક એમના પૂર્વ જન્મ દેખાય છે.

(૧૪) કોઈને બિહામણા દૃશ્યો દેખાય છે.

(૧૫) કોઈને સ્વજનો, મિત્રોના, પારકા લોકોનો અથવા પોતાનું મૃત્યુ દેખાય છે.

(૧૬) કોઈને એમના મુંઝવણના પ્રશ્નોનો જવાબ ધ્યાનમાં આપમેળે મળી જાય છે.

(૧૭) કોઈને શરીરમાંથી બહાર નીકળી ફરવાનો અનુભવ થાય છે. કોઈને બ્રહ્માંડમાં વિચરવાનો અનુભવ થાય છે.

(૧૮) કેટલાક વિધાર્થીને અભ્યાસ યોગ્ય રીતે કરવો એનું જ્ઞાન થાય છે તો કોઈને ભવિષ્યમાં થનાર પરીક્ષામાં પૂછાયેલા પ્રશ્નો દેખાય છે.

(૧૯) કેટલાકને કોઈ પણ પ્રકારની યોગિક ક્રિયાઓ અથવા અનુભૂતિ થતી નથી. એમને માત્ર નીરવ શાંતિ અને સામાધનનો અનુભવ થાય છે.

વિશેષ સૂચના:

ઉપર જણાવેલ અથવા તો એનાથી અલગ એવી સારી કે ખરાબ, આનંદદાયક બિહામણી અનુભૂતિ સિદ્ધયોગના સાધકો થઈ શકે છે. માત્ર સાધકોએ એનાથી ડરવું કે ગભરાય જવું નહીં. આ અનુભૂતિઓ સાધકોને એમના પૂર્વજન્મના સંસ્કારો, કર્મો અને પ્રારબ્ધના કારણે થાય છે. આ અનુભૂતિ દ્વારા કુંડલીની શક્તિ સાધકના પૂર્વજન્મના અથવા જન્મના કારણે પેદા થતી અશુદ્ધિઓને દુર કરે છે. એથી જ સાધકોનું મન અને શરીર સ્વસ્થ અને શાંત થઈ આત્મદર્શનના માર્ગ આગળ વધે છે.

★★★

૭. સિદ્ધયોગના ફાયદાઓ

સિદ્ધયોગના ફાયદાઓ શું છે?

ગુરુદેવ સિયાગ પાસેથી સિદ્ધયોગની દીક્ષા લીધા પછી સાધકોના જીવનમાં એક સંપુર્ણ પરિવર્તન આવે છે અને જીવનમયી થાય છે. સિદ્ધયોગ સાધના નિયમિત કરવાથી થતા કેટલાક મુખ્ય ફાયદાઓ નીચે પ્રમાણે છે:

(૧) શારીરિકબીમારીઓનું સંપુર્ણ નિરાકરણ:

આ સાધનામાં ગુરુદેવ આપેલ મંત્રનો જાપ અન ધ્યાન નિયમિત કરતાં જટીલ અને અસાધ્ય બીમારીઓ જેવી કે એઈડ્સ, કેન્સર, ડાયાબિટીઝ, હીમોફીલીયા, હિસ્ટીરીયા, ચામડીના દર્દો વગેરે રોગો ધીરે ધીરે નબળા પડી સંપુર્ણ રીતે શરીરથી દુર થઈ જાય છે અને સાધક રોગ મુક્ત અને આનંદમય જીવન વીતાવે છે.

(૨) માનસિકરોગથી મુક્તિ:

આજના ઝડપી જીવનમાં કામકરતા કે બીજા અન્ય કારણોસર મોટાભાગના લોકો માનસિક દબાણમાં આવી જાય છે. જેનાથી શરીર અને મનનું સંતુલન બગડે છે. નકારાત્મક વૃત્તિ વધી જાય છે અને કેટલાક કેસોમાં તો લોકો ડીપ્રેશન જેવી ભયંકર માનસિક બીમારીનો

www.the-comforter.org

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा व कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला **सहस्रार** में स्थित है और उसकी **शक्ति मूलाधार** में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है। उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके **चेतन** होकर **उर्ध्वगमन** करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही **'मोक्ष'** है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक **मृगमरीचिका** ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है। उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण प्रभुत्व होता है। इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित **परमसत्ता** की **पराशक्ति** है। अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित **उस परम तत्त्व** की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, **एक समय** में, मात्र **एक ही व्यक्ति** के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह **सार्वभौम सत्ता** है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व **क्रांतिकारी** परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को **अभूतपूर्व** एवं **अद्वितीय** देन है। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी परम श्रद्धेय समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग अपने सद्‌गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार इस **दिव्य ज्ञान** का **महाप्रसाद** बाँटने, विश्व में **अकेले** ही निकल पड़े हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो **उर्ध्वगमन** करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ स्वयं करवाती है।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् पर शिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी **श्री मत्स्येन्द्र नाथ** जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध **तापों-आदि भौतिक, आदि दैहिक व आदि दैविक (Physical, Mental & Spiritual)** का शमन (नाश) करता है।

इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व वैज्ञानिक समस्या नहीं है; जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो? **अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है जो सदगुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।**

सिद्धयोग से लाभ

समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं नाम जप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

- सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, फोबिया (भय), चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।
- विद्यार्थियों की **एकाग्रता** एवं **याददाश्त** में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।
- आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।
- गृहस्थ जीवन में रहते हुए **'भोग एवं मोक्ष'** दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।
- वैदिक दर्शन द्वारा ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एंव साक्षात्कार।

❖❖❖

www.the-comforter.org

शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रमों में, सद्गुरुदेव जो "संजीवनी मंत्र" देते थे, इस मंत्र के विषय में सद्गुरुदेव के श्री मुखारविन्द-दिव्यांश

–हर युग में मनुष्य की शक्ति और सामर्थ्य को ध्यान में रखकर ही आराधना की विधि तय होती है। अब कलियुग में केवल हरि-नाम का जप ही सारे कष्टों से छुटकारा देता है।

–मुझे वही शिष्य प्रिय है, जो नाम जप करता है, चेतन है। सातों कोश चेतन हो जाएंगे, मेरे गुरु की कृपा से।

–आपको सिर्फ नाम जप व ध्यान करना है, आगे की ड्यूटी गुरु की।

–नाम जप में किसी प्रकार की हिंसा नहीं होती, कर्मकाण्ड यज्ञ करोगे, आग में घी, लकड़ी वगैरह जलाओगे तो उसमें थोड़े बहुत कमोवेश जीव जलेंगे।

–जप यज्ञ, कर्मकाण्ड यज्ञों से हजार गुना ज्यादा फायदा देता है।

–(**सद्गुरुदेव का संजीवनी मंत्र**) यह राधा और कृष्ण का मंत्र है। इसमें दोनों तत्त्व शामिल है। राधा तत्त्व-सांसारिक सुख देगा व कृष्ण तत्त्व-मोक्ष।

मुख्यालय:- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342001
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

www.the-comforter.org

हैं, इसमें कोई आश्चर्य नहीं !

गुरु ?- 'गुरु' की सर्वोत्तम परिभाषा है-**'जो गोविन्द से मिलाय !'** जिनकी **तस्वीर से ध्यान** लगता हो ! जिनसे मनुष्य जीवन दिव्य चेतना में रूपान्तरित हो जाए। यही सच्चे सद्गुरु की पहचान है।

निर्गुण निराकार ईश्वर के सगुण साकार रूप 'गुरु' होते हैं। गुरु और ईश्वर में कोई भेद नहीं होता है। **'गुरु', ईश्वर और जीव को जोड़ने वाला 'तार' होता है। अगर तार कटा फटा नहीं है और वह उस परमसत्ता से जुड़ा हुआ है तो जो भी प्राणी उनसे जुड़ेगा, उसके अन्दर उस परमसत्ता का प्रकाश हुए बिना नहीं रह सकता।** एक बार प्रकाश हुआ कि जीव चेतन हो जाता है; इस प्रकार एक जलता हुआ दीपक असंख्य दीप प्रज्वलित करके संसार से अंधकार दूर कर सकता है।

योग ?- योग का अर्थ जहाँ गणित में जोड़ या प्लस है, उसी प्रकार आध्यात्मिक भाषा में योग का अर्थ है, **आत्मा का परमात्मा से मिलन।**

महर्षि पतंजलि ने अपनी योग दर्शन की पुस्तक में समाधिपाद के दूसरे सूत्र में कहा है- योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः अर्थात् चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है, जो मन इधर-उधर भाग रहा है, वह एक जगह शांत हो जाए, एकाग्र होकर परमात्मा में लय हो जाता है, इसी का नाम योग है। एक अन्य परिभाषा में मातृशक्ति कुण्डलिनी (Mother Power) का जाग्रत होकर सहस्रार में पहुँचने का नाम ही योग है, या **पृथ्वी तत्त्व** का आकाश तत्त्व में **लय** होना ही योग है।

भारतीय योग दर्शन में वर्णित **'योग'** का मूल उद्देश्य **''मोक्ष''** है। परन्तु मानव को उस स्थिति तक विकसित होने के लिए, उसके त्रिविध ताप शान्त होने आवश्यक हैं। इस संबंध में महायोगी श्री गोरखनाथ जी महाराज ने कहा है:-''यह 'योग' वेदरूपी कल्पतरु का **'अमर-फल'** है। जिससे साधक के त्रिविध-तापः-आदि दैहिक (Physical), आदि भौतिक (Mental) व आदि दैविक (Spiritual) शांत होते हैं। साधक दिव्य रूप में रूपान्तरित (Divine Transformation) हो जाता है। **हे सत्पुरुषो ! इसका सेवन करो।''**

कुण्डलिनी ?-जिस देवी शक्ति को बाहर हम राधा, सीता, पार्वती, अम्बा, भवानी, योगमाया, सरस्वती आदि नामों से पूजते हैं-वही परम चेतना हमारे शरीर में, रीढ़ की हड्डी के अंतिम सिरे अर्थात् **मूलाधार** में नागिन (सर्पिणी) के रूप में, साढ़े तीन फेरे (कुण्डली) लगाकर **सुषुप्त अवस्था** में रहती है। जिसे योगियों ने कुण्डलिनी कहा है। इसके जाग्रत हुए बिना मनुष्य का व्यवहार **पशुवत** रहता है। समर्थ सद्गुरु की करूण कृपा से ही वह आद्य परम शक्ति कुण्डलिनी जाग्रत होती है।

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में **अन्तर्मुखी** होकर खोज की तो पाया कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड मनुष्य शरीर में है। जब ऋषियों ने और गहन खोज की तो पाया कि इस जगत् का रचयिता **'सहस्रार'** में स्थित है और उसकी शक्ति **'मूलाधार'** में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना की गई। उस परम पुरूष की शक्ति उसके आदेश से नीचे उतरती गई। इसके चेतन होकर **ऊर्ध्वगमन** करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही **'मोक्ष'** है। अर्थात् वह ईश्वर है।

गुरु-शिष्य परम्परा में जो

www.the-comforter.org

शक्तिपात दीक्षा का विधान है, उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। **गुरु का इस शक्ति पर पूर्ण प्रभुत्व होता है, इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है।** क्योंकि यह सहस्रार में स्थित परम सत्ता की '**पराशक्ति**' है। अतः यह मात्र उसी का आदेश मानती है। **यह शक्ति विश्व में एक समय में मात्र एक ही व्यक्ति के माध्यम से कार्य करती है।**

मंत्र ?–मंत्र दीक्षा में गुरु की शक्ति, शिष्य में मंत्र के द्वारा प्रवाहित होती है। गुरु जिस मंत्र की दीक्षा देता है, **यह मंत्र असंख्य ऋषि-मुनियों द्वारा जपा हुआ होता है तथा उसे उसने भी लम्बे समय तक जपा है।** उस मंत्र शक्ति को आत्मसात किया हुआ होता है। **गुरु जिस शब्द को चेतन, सजीव, शक्तिपूर्ण बनाता है, उसी की शक्ति परिणाम देती है।** उस मंत्र में और गुरु में कोई अंतर नहीं रहता है। गुरु का संपूर्ण शरीर मंत्रमय बन जाता है। ऐसे चेतन मंत्र की गुरु जब दीक्षा देता है, वही मुक्ति दिलाता है।

–''मंत्रों को पुस्तक से पढ़कर जितना भी जप किया जाये, उनका कुछ भी प्रभाव न होगा, उनमें 'क्रियात्मक शक्ति' न होगी जब तक वे स्वयं 'गुरु' द्वारा उपदिष्ट न हो।'' अर्थात् चेतन गुरु **की दिव्य वाणी में मंत्र सुनना ही फलदायी होता है।**

स्वामी विवेकानन्द जी ने अमेरिका में कहा था–''**वह आद्यशक्ति 'नारायण' से 'नर' हो गयी। वह 'नर' वापस 'नारायण' अर्थात् ईश्वर हो सकता है और होगा।**''

स्वामी जी की यह भविष्यवाणी, शब्दब्रह्म से परब्रह्म की प्राप्ति के सिद्धांत के अनुसार-अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग की शक्तिपात दीक्षा द्वारा संजीवनी मंत्र से मानवता में मूर्तरूप ले रही है।

स्वामी विवेकानन्द जी ने अमेरिका में कहा था–''वह आद्यशक्ति 'नारायण' से 'नर' हो गयी। वह 'नर' वापस 'नारायण' अर्थात् ईश्वर हो सकता है और होगा।''

महर्षि श्री अरविन्द ने कहा था–''हमारे ऋषियों ने जिस दिव्य ज्ञान को प्राप्त किया था, वह पुनः लौटकर आ रहा है, हमें इस प्रसाद को संपूर्ण विश्व में बाँटना है।''–

सद्गुरुदेव सियाग की तस्वीर से क्यों लगता है ध्यान ?–

सद्गुरुदेव सियाग के सिद्धयोग की देन शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण से हजारों लोगों में बड़ा ही अद्भुत परिवर्तन आ रहा है। सभी प्रकार के असाध्य रोगों व नशों से सहज में छुटकारा मिल रहा है। सद्गुरुदेव सियाग को निर्गुण व सगुण की दोनों सिद्धियाँ होने के कारण से इनकी तस्वीर से ध्यान लगता है। मानव शरीर में असीम ज्ञान और विज्ञान की पराकाष्ठा है। वह इस आराधना द्वारा सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान कर सकता है और हो रहा है।

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ? विश्व के किसी भी कोने में बैठा व्यक्ति सद्गुरुदेव सियाग की **''तस्वीर का ध्यान''** और **''संजीवनी मंत्र का सघन जप''** कर, भारतीय ऋषि-मुनियों की अलौकिक ज्ञान धारा से जुड़कर, परमसत्य का साक्षात्कार करके, अपना सर्वांगीण विकास कर सकता है (अपने घर बैठे ही)। ध्यान की विधि वेबसाइट में उपलब्ध है।

सद्गुरुदेव सियाग 5 जून 2017 को ब्रह्मलीन हो गए लेकिन उनकी तस्वीर का ध्यान और उनकी वाणी में मंत्र सुनकर जपने से बड़ा ही अद्भुत बदलाव आता है। साधक को सद्गुरुदेव सियाग का ध्यान करने से वे सभी वांछित परिणाम मिलते हैं, जो उनके सशरीर रहते हुए मिलते थे। गुरुदेव शाश्वत और सर्वव्यापक है।

–सम्पादक

मुख्यालय-अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
पोस्ट बॉक्स नं. 41, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)
भारत-342001
संपर्क- 0291 2753699, 9784742595, संजीवनी मंत्र के लिए-07533006009
Website-
www.the-comforter.org
Email-
avsk@the-comforter.org

www.the-comforter.org

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है?

सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

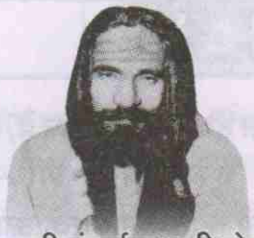

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी
(ब्रह्मलीन)

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या? ध्यान करके देखें।

► ध्यान की विधि ◄

आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से खुली आँखों से देखें। अपनी समस्या के समाधान हेतु सद्गुरुदेव से करुण प्रार्थना करें। फिर आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं।) केन्द्रित कर, गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करुण प्रार्थना करें। अब गुरुदेव द्वारा दिये गए दिव्य मंत्र का सघन जाप करें।

यदि गुरुदेव से दीक्षित नहीं हैं तो कोई भी ईश्वरीय नाम जैसे- गुरुदेव, राम, कृष्ण, वाहेगुरु, जीसस, अल्लाह आदि का मानसिक जप करें (बिना होंठ-जीभ हिलाए)। इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ध्यान अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी। इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रूप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।

► Method of Meditation ◄

Sit in a comfortable position. Look gurudev's picture for some time then close your eyes and try to imagine gurudev at place between your eyebrows (third eye) and request for 15 minutes of meditation. While thinking of gurudev's image, silently chant (without moving your lips or tongue) gurudev's mantra or any spiritual force (**Ram, Krishna, Jesus, Waheguru, Allah etc.**) which you believe in.

During meditation if you experience any kind of automatic movement then don't try to stop. The movements will stop automatically after 15 minutes.

शक्तिपात–दीक्षा

शक्तिपात दीक्षा एक महान् और दिव्य विज्ञान है जिसके द्वारा सिद्धगुरु अपनी दिव्य शक्ति को शिष्य में सीधे संप्रेषित कर, उसकी सुषुप्त शक्ति कुण्डलिनी को जाग्रत करते हैं।

गुरु शिष्य परम्परा में चार प्रकार से शक्तिपात दीक्षा का विधान है। स्पर्श द्वारा, दृष्टि द्वारा, संकल्प व शब्द (मंत्र) दीक्षा द्वारा।

- गुरुदेव का मंत्र चेतन (**Enlightened**) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।
- नाम जप ही चाबी (**Key**) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (**Round the Clock**) सघन जपो।

गुरुदेव की दिव्य आवाज में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें–07533006009

सभी जाति–धर्मों के जिज्ञासु स्त्री–पुरुषों को स्नेह निमंत्रण।

मुख्यालय : **अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र**

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342 003 सम्पर्क : 0291-2753699, 9784742595

Web : www.the-comforter.org

www.the-comforter.org

गुरु गोविन्द दोनों खड़े, किसके लागूं पांव ।
बलिहारी गुरु देव की, गोविन्द दियो मिलाय ।।

– संत श्री कबीरदास

जोधपुर आश्रम में बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी की बरसी पर पूजा-अर्चना कर, किया 15 मिनट ध्यान।

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365 * POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2017 & VALID UP TO 31.12.2019
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

सद्गुरु कृपा से अगम लोक का भेदन

''हमारे सभी ऋषि कह गये हैं कि उस परमसत्ता का निवास अपने शरीर के भीतर ही है। हमारे धार्मिक ग्रंथ भी यही बात कहते हैं। अत: अन्तर्मुखी आराधना के बिना काम बन ही नहीं सकता। यह आराधना भी कोई आसान काम नहीं है। वह परमसत्ता ऐसे भयंकर चक्रव्यूह को पार करने पर मिलती है, जिसे पार करना अकेले जीव के लिए बहुत कठिन है। इस रास्ते पर चलने के लिए किसी भेदी संत सद्गुरु की आवश्यकता होती है। भगवान् राम और कृष्ण को भी गुरु धारण करना पड़ा था। इसके अलावा सभी संत, ''गुरु'' की महिमा का गुणगान कर गये हैं। 'अगम लोक' का भेद और रास्ता, केवल गुरु कृपा से ही प्राप्त हो सकता है और कोई रास्ता ही नहीं है।

संत कबीरदास जी ने कहा है :-

कबीरा धारा अगम की सद्गुरु दई लखवाय।
उल्ट ताहि पढ़िये सदा स्वामी संग लगाय।।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

'आराधना का जवाब क्यों नहीं मिलता'
शीर्षक से

अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें
Spiritual Science • स्पिरिचुअल साइंस
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी
पोस्ट बॉक्स नं.41, जोधपुर (राज.) 342003 फोन: 0291-2753699, मो. : 9784742595

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान् ____________________

____

स्वत्वाधिकारी : अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए ताज प्रिण्टर्स, बोराणा हाऊस, जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर से केवल मुद्रित एवं अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित। सम्पादक – रामूराम चौधरी

www.the-comforter.org